TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4499**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

ण कल्पद्रुमं ॥ नौमीड्यं गिरिजापतिं गु
णनिधिं कंदर्पहं शंकरं ॥ २ ॥ यो
ददाति सततं शंभु ॥ कैवल्यमपि दु
र्लभं ॥ खलानां दंडकृद्योसौ शंक
र सतनोतु मे ॥ सोरठा ॥ सिंधु बच
न सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अ
स कहेउ ॥ अब बिलंब केहि काम
करहु सेतु उतरै कटकु ॥ सुनहु भा
नु कुल केतु जामवंत कर जोरि कह ॥
नाथ नाम तव सेतु नर चढि भव
सागर तरहि ॥ चौपइ ॥ यह लघु
जलधि तरत कति बारा ॥ अस सु
नि पुनि कह पवनकुमारा ॥ प्रभु प्र
ताप बडवानल भारी ॥ सोषेउ प्रथ
म पयोनिधि बारी ॥ तव रिपु नारि
रुदन जल धारा ॥ भरेउ बहोरि भये
तेहि खारा ॥ सुनि अति उकुति पवन 1

सुतकेरी ॥ हरषे कपि रघुपति तन हेरी
जामवंत बोले दोइ भाई ॥ नल नी
लहि सब कथा सुनाई ॥ रामप्रता
प सुमरि मन माही ॥ करहु सेतु प्र
यास कछु नाही ॥ बोलि लीये कपि नि
कर बहोरी ॥ सकल सुनहु बिनती क
छु मोरी ॥ राम चरन पंकज उर धर
हू ॥ कौतुक एक भालु कपि करहू ॥
धावहु मरकट विकट वरूथा ॥ आ
नहु बिटप गिरन के जूथा ॥ सुनि
कपि चले भालु करि हूहा ॥ जय र
घुवीर प्रताप समूहा ॥ दोहा ॥ अति
उतंग गिर सैल गन लीलहि लेहि
उठाइ ॥ आनि देहि नल नील कह
रचहि सेतु बनाइ ॥ चौपइ ॥ सैल वि
साल आनि कपि देही ॥ कंदुक इव नल
नील ते लेही ॥ जग सह सनो जन थ

ल माही ॥ जोजन परवत सत तन पाही ॥६॥
कहहु विचार करीय का भाई ॥ हरषित
सब कपि हेतु तर जाई ॥ केहि उठाय म
ही घर नारी ॥ कहहि एक मन है मप्र
चारी ॥ एपर केहि मत रनधीरा ॥ सेतु
विषम अरु तोय न पीरा ॥ एक दोइ एक
नहि गए ऊपसि राई ॥ बसऊ अह जोजन
कीच पुराई ॥ जो जो न है अपुहु पर
वाना ॥ जहै पु सेतु निरखे एन गवा
ना ॥ नीति निधान तुरत तह आए ॥
रीछ कपीस बली घन आए ॥ दोहा
कपिपति असुले आपती जामवंत
चित लाइ ॥ सुनि मम वचन सुसे
तु अह तुरतहि ना पहु जाइ ॥ चौपइ
अने श्रम पा परि पद सिर नाई ॥ ना
पा तुरत सेतु तिन्ह जाई ॥ करग ह
नेय श्री अगति जेतू ॥ तित ना क्रि

॥३॥ ससि घुंनइ से तू ॥ आइ तुरत तिन यु
त्रुहि सु नाई ॥ सुनि रघुपति अस ब्र
लव जाई ॥ आन मोरि सत ब्रह्म पुका
रा ॥ जो जेहा होइ तहा गिरि डारा ॥ आ
वहि वेगि चलि य अवपारा ॥ सिंन
श्री या सिधि श्री जहमारा ॥ राम र
जाय सु जो ब्रह्म दीन्हा ॥ हर षि ब
पी स सो तुरत ही श्री न्हा ॥ द्वा दस
जोजन मरजा द ब्रारि ॥ राचिस से
त सु न कारि ॥ राम आन सुग्रीव
घेरा वा ॥ जहा तहा ब्र पिनि अवन
सुनि पावा ॥ जहा तहा डारि दीन्ह पा
षाना ॥ जसे सो सुंदर परवत नाना
॥दोहा॥ ऐक्र चरित अति सय सचि
र चित चरि सुनहु षगेस ॥ गरे पुप
वन सुत पुत रा दिस जेहि गिरि व
सोहि घनेस ॥ चौपई ॥ ना मगोवध

नसुचिरयलरा ॥ जोजन घसंता सुविस
रा ॥ अंग सु मेर ब्रेर सुनयावन ॥ लगेय
वनसुत तास पुठावन ॥ चिव घि उपाइ
श्री न्हे वल वान ॥ द्वादन चुमि सो गम
आना ॥ सनुमुनि पवन तनय जो अ
रही ॥ सगरी व सुधा ब्रु रतल घरही ॥ ति
न ब्रह या हि लघु गिरि गरु आना ॥ श्रो
तु प्रथीन्हे चलहि नगवाना ॥ जानि
मठि न ब्रापि कोघव ढावा ॥ राम हिसु
मिरि लेगूर छुठावा ॥ पुठ तल गूर गो
व घन देषा ॥ सो डरि नयउ विपु ब्रवे
षा ॥ पवन तनय तोहि राम दुहाई ॥
मोहि न हति लगूर नवाई ॥ दोहा ॥
राम सपथ सुनि तुरत ही सिथल नी
य उहनि वंत ॥ नहरि ब्रह्म त्रसनो
ति सुनु चलसठ तहा नगवंत ॥
चौपइ ॥ सुनि ब्रापि वचन गोवधन

॥४॥ बोला॥ प्रभु पहं चलउ कहउ अस मो
ला॥ जौ मोहि राम हरस तुम्हरे हु॥ तौ लै
चलहु अचल जस लेहु॥ सेत हेत तु
मकहं ले जाहू॥ हरसहि खाइ घरहु सु
चठाहू॥ अस कहि हनूमंत बर दीन्हा
बिन श्रम चरि लंगूर पर लीन्हा॥
राम सुमरि कपि कीन्ह पयाना॥ आ
वत देखा बन नियराना॥ भुवन सु
नात बसपथ न वानी॥ हाटेन यु
ह कपि मन नहि गलानी॥ प्रभु बीस
पथ मैं रि नहि जाई॥ और मेरु नहि
सकहि उठाई॥ असमंजस महं हि
न कछ मग येहू॥ पुनि अस गिरिहि
बुझावत नयहू॥ दोहा॥ गोवर्ध
न तुम रहहु यहां मैं गवनौ प्रभु
पास॥ कछु संसय जिन करहु चि
त पूजहि सब तुव आस॥ चौपई

बेद पुरान संत अस भाखा॥ संतत राम दास
पन राखा॥ सोइ रघुबीर रखहि पन मोरा॥ क
रिहहिं पूरन मनोरथ तोरा॥ तिहि प्रबोध क
पि कहा कराई॥ आयेहु तुरत जहा रघुराई॥
पद गहि ठाढ भयउ हनूमाना॥ प्रभु अंत
रजामी सब जाना॥ कह्यो न हेत हनूमान
सुनावा॥ प्रभु आपुहि तिनि निकट बुलावा॥
गोवर्धन कहं तुम बर दीन्हा॥ तातसु काज
कीन्ह तुम्ह कीन्हा॥ वचन तुम्हार सत्य हनू
माना॥ धरिहहुं द्वापर सुन हनुमाना॥ गो
कुल जन्म लेहुं मैं जबही॥ चरित पुनीत
करउ अति तबही॥ दोहा॥ तुम्हरे वचन सने
ह लव तातसु नहि चित लाइ॥ बरष पचास ज
म तेहि राखिहहु सीस चढाइ॥ चौपई॥ मुनि
कह अंगुरि पर चरसमाना॥ राखिहु अवसि
सुनहु हनूमाना॥ गिरिहि बुझाइ राखि ते
हि ठाहूं॥ आवहु तात वेगि बलि जाहूं॥ हर
ष प्रभु नहि रामस माना॥ जौ राखहि जन प
र परमाना॥ नयन नीर भरि पवनकुमारा॥

॥५॥ वहरि नाहि गिरि वरि पगधारा ॥ कहि वृतांत
करि जासु परितोषा ॥ फिरि प्रभु पह आएउ अ
ति चोषा ॥ वेनतेय प्रभु जुग्नि जोरी ॥ यह
परगह प्रतो प्रहो वहोरी ॥ सव जग पुगर हं अ
घाएहि माची ॥ श्रीर तिविमल अहे जग मा
ची ॥ वुजपर जव हि सुरेसरि साना ॥ वारिवृ
सिंभई प्रुलय समाना ॥ छंद ॥ जव वृस्ति
नई अति प्रलय सम महरि विमल जव वृज
जानेउ ॥ प्रभु लीन प्रर पर छ नेइ व गिरिस
जस निगम व षानेउ ॥ मुनि दुगन जो अत
वेद गुन सो जाम जव हि सिरानेउ ॥ वुजप
रन सीअ र परेउ तव चय माथि जल्ल र प
रानेउ ॥ दोहा ॥ मानम हं सुरराज अर वुज
अहल्लीनउ धारि ॥ होय है आगे चरित अ
स होय वीतैं वहु वारि ॥ चौपई ॥ असचरि
त अरि हहि रघुनाथा ॥ सुमनु जो आर घ
जग्न गाथा ॥ देपि सेत अति सुंदर रचना
व हिसि कृपानिधि वोले वचना ॥ परम प
रम पउत्तम यह धरनी ॥ महिमा अमित ज
य नहीं वरनी ॥ करिहउ इहा संभु थापना ॥

मोरे हिर दय परम कलपना ॥ सुनि कपीस वहो ॥७॥
दूत पठाए ॥ मुनिवर सकल वोलिलै आए ॥
लिंग थापि विधिवत करि पूजा ॥ सिव समान
मोहि प्रिय वहि दूजा ॥ सिव द्रोही मम भगत क
हावा ॥ सो नर सपनेहु मोहि न पावा ॥ संक
र विमुष भगति चहै मोरी ॥ सो नर कीय मूढ
मति थोरी ॥ दोहा ॥ संकर प्रिय मम द्रोही सि
व द्रोही मम दास ॥ ते नर करहि कलप भरि
घोर नरक महुँ वास ॥ चौपई ॥ जे रामेस्वर द
रसन करही ॥ ते तन तजि हरि लोक सिधर
ही ॥ जो गंगाजल आनि चढावहि ॥ सो स
जोज्य मोक्ष नर पावहि ॥ मम कृत सेत
जो दरसन करिहै ॥ सो विनु श्रम भवसागर
तरिहै ॥ राम वचन सव के मन भाए ॥ मुनि
वर निज निज आश्रम आए ॥ गिरजा रघु
पति कै यह रीती ॥ संतत करहि प्रनत पर प्री
ती ॥ वाधा सेत नील नल नागर ॥ राम कृ
पा जसु भयउ उजागर ॥ वूडहि आनहि
वोरहि जेई ॥ भयउ उपल सम वोहित ते
ही ॥ महिमा इह न जलधि की वरनी ॥ पा
हन गुन न कपिन कै करनी ॥ दोहा ॥ श्रीर

॥६॥ पुनीर प्रताप तैं सिंधु तरे पाषान ॥ ते मतिमंद
जे राम तजि भजहि जाइ प्रभु आन ॥ चौ
पई ॥ बाधि सेतु अति सुदृढ बनावा ॥ देषि
कृपानिधि के मन भावा ॥ चली सेन कछु
बरनि न जाई ॥ गर्जहि मर्कट भट समु
दाई ॥ देषन कहु प्रभु करुनाकंदा ॥ प्रग
ट भये सब जलचर बृंदा ॥ नाना मक
र निक्र झष व्याला ॥ सत जोजन त
न परम बिसाला ॥ असेउ एक तिन्हहि
धरि षाई ॥ एकन्ह कै डर एक डराही ॥ प्र
भुहि विलोकत टरहि न टारे ॥ मन ह
रषित सब भये सुषारे ॥ तिन्ह की ओट
न देषिय बारी ॥ मगन भये हरि रूप
निहारी ॥ चला कटक प्रभु कछु बरनि न
जाइ ॥ को कहि सक कपि दल विपुला
ई ॥ दोहा ॥ सेतुबंध भइ भीर अति क
पि नभ पंथ उडाहि ॥ अपर जलचरन्हि
पर चढि चढि पारहि जाहि ॥ चौपई ॥
अस कौतुक बिलोकि द्वौ भाई ॥ बह

॥७॥ व्रलता निज समझि बहोरी ॥ वहसि चला
गेह करि भय भोरी ॥ मंदोदरी सुना प्रभु
आये ॥ कौतुकही पयोधि बधाये ॥ कर ग
हि पतिहि भवन निज आनी ॥ बोली प
रम मनोहर बानी ॥ चरन नाइ सिर अं
चल रोपा ॥ सुनहु बचन पिय परहरि
कोपा ॥ नाथ बैर कीजे ताही सौ ॥ बुधिब
ल सकिय जीति ताहि सो ॥ तुमहि रघु
पतिहि अंतर कैसा ॥ षलु षद्योत दिन
करहु जैसा ॥ अति बल मधु कैटभ जि
न्हे मारे ॥ महावीर दैत्यासु त संघारे ॥
जेहि बल बाधि सहस भुज मारे ॥ सो
अवतरेउ हरन महि भारा ॥ तासु वि
रोध न कीजीय नाथ ॥ काल करम जि
व जाके हाथा ॥ दोहा ॥ रामहि सौपि उजा
नुकी नाइ कमल पद माथ ॥ सुत कह
राज समर्पि बन जाइ भजिहु रघुना
थ ॥ चौपई ॥ नाथ दीनदयाल रघु
राई ॥ बाघउ सनमुष गये न षाई

सिव ते अपर रघुराई॥ सैन सहित उत
रे रघुवीरा॥ कहि न जाइ कपि जूथप भी
रा॥ सिंधु पार प्रभु डेरा कीन्हा॥ सकल
कपिन्ह कहं आयस दीन्हा॥ षाहु जाहि
फल मूल सुहाये॥ सुनत भालु कपि
जहां तहां धाये॥ सब तरु फरे राम हि
त लागी॥ रितु अरु कुरितु काल गति त्या
गी॥ षाहि मधुर फल विटप हलावहि
लंका सनमुष सिषर चलावहि॥ ज
हां कहु फिरत निसाचर पावहि॥ घेरि
सकल बहु नाच नचावहि॥ दसनन
काटि नासिका काना॥ कहै प्रभु सुजस
देहि तब जाना॥ जिन्ह कर नासा श्रव
न निपाता॥ तेरा वनहि कही सब बाता॥
सुनत श्रवन वारिध बंधाना॥ दसमु
ष बोलि उठा अकुलाना॥ दोहा॥ वां
धा वननिधि नीरनिधि जलधि सिं
धु वारीस॥ सत्य तोहि निधि कंपित
उदधि पयोधि नदीस॥ चौपई॥ वा

भागी अंगद हनूमाना॥ चरन कमल चापत
विधि नाना॥ प्रभु पाछे लछिमन वीरासन
॥ कटि निषंग कर बान सरासन॥ दोहा॥ इहि वि
धि क्रिपा रूप गुन धाम राम आसीन॥ ते न
र धन्य जे ध्यान मह रहत सदा लय लीन॥
चौपई॥ पूरव दिसा विलोकि प्रभु देषा उदि
त मयंक॥ कहत सब हि देषहु ससिहि म्रगप
ति सरिस असंक॥ चौपई॥ पूरव दिसि गिरिगुह
निवासी॥ परम प्रताप तेज वल रासी॥ मंत
नाग तम कुंभ विदारी॥ ससि केसरी गगन वि
चारी॥ विथुरे नभ मुकताहल तारा॥ निसा सुं
दरी केर सिंगारा॥ कह प्रभु ससि मह मेचकता
ई॥ कहहु काह निज निज मति भाई॥ कह सु
ग्रीव सुनहु रघुराई॥ ससि मह प्रगट भूमि कै
छाई॥ मारेउ राहु ससिहि कह कोई॥ उर मह
परी स्यामता सोई॥ कोउ कह जब विधि र
ति मुष कीन्हा॥ सार भाग ससि कर हरि ली
न्हा॥ छिद्र सो प्रगट इंदु उर माही॥ तेहि मग
देषि अ नभ परिछाही॥ प्रभु कह गरल वं
धु ससि केरा॥ अति प्रिय निज उर दीन्ह वसे
रा॥ विष संजुत कर निकर पसारी॥ जारत
विरहवंत नर नारी॥ दोहा॥ कह मारुतसु

7

तसुनहुप्रभुससितुम्हारप्रेयदास॥तवमूरति
॥१०॥ उरबिधुबसीसोइस्यामताभास॥१॥पवनतन
यकेबचनसुनिहरषेरामसुजान॥दछिनदसा
बिलोकिप्रभुबोलेकृपानिधान॥चौपई॥देषि
बभीषनदछिनआसा॥घनघमंडदामिनी
बिलासा॥मधुरमधुरगरजहिघनघोरा॥
होइबृष्टिजनिउपलकठोरा॥कहतबभीष
नसुनहुकृपाला॥होइनतडितनबारिध
माला॥लंकासिषररुचिरआगारा॥तहादस
कंधरदेषअषारा॥छत्रमेघडंबरसिर
धारी॥सोइजनुजलदघटाअकारी॥मंदो
दरीश्रवनताटंका॥सोइजनुप्रभुदामिनी
दमंका॥बाजहितालमृदंगअनूपा॥सो
इरवसरिससुनोसुरभूपा॥प्रभुमुसकान
समुझिअभिमाना॥चापचढायबानसं
धाना॥दोहा॥छत्रमुकुटताटंकसबहते
एकहीबान॥देषतसबकेमहिपरेमरम
नकाहूजान॥असकौतुककरिरामसर॥
प्रबसेआयनिषंग॥रावनसभाससंकमति
देषिमहारसभंग॥चौपई॥असकौतुक
करिरामबिसेषा॥लाघवअस्त्रनयनस
बदेषा॥सोचहिसबमिलिहिरदयमझारी

मिताई॥तेहितेयहहैबालिमरभा
ई॥सहअकौरिअपिइनकेसंगा॥रा
तपीतसेतबहुरंगा॥दोहा॥गिरबरटा
पनआवैउक्तीआवैरैनु॥तरुन
तेजयहरुधैतारातननयसुबेनु॥
चौपई॥यहअपिकरदेबहुतनपे
रा॥जनुसपधतोयचलेउसुमेरा॥
एकबारलंकाइकजारी॥पुनिगजीत
आवेयहिपारी॥जिहिहिनगरजेअ
जनीजाए॥बालअरुतलीलइकह
आए॥तीनसमहैअजोजनएहुए
उरआचलउपरजैनयउ॥महुश्रीचौ
हजेबजुसभाना॥मारुतनामधरे
हनुमाना॥कामरूपकोरिकवल
हैही॥कालअरुदेकुलसमभरहीं॥
बेगवंतजसगरुडउगाही॥बुधिबं
तहुसरअसकाही॥नाअनागअरन
रपुरगतिधारी॥महाअविधिनपते
जपुरारी॥बारिधनाघेउगोपदजैसे
ऐहिअपीससैजसवकेसे॥दोहा॥ते

8

लं॥
॥१ जन हरन इव पावन प्रेम पवन नेवेग आप
॥१५॥ र ॥ अंध ल्लीधे पुनु श्रीपति हि श्रीरघुवं
स भारा ॥ चौपई ॥ अनमील बरन कुस
मत नुरेचत ॥ धन्य सो जन्म हि मां जो
बरित ॥ मन गमंद सु भुज दंड ॥ धं
नु बान असि धरने पुच्छं दा ॥ सुर वि
सोला नुलिउल न अधर ॥ अंबु केहरे
वा पुसल्लतर ॥ मुख दुवि सो उपमा
यवि जो लहई ॥ ससि सरोष सम कहे न
हसोई ॥ इस नपानि मी श्रा ति कहे श्रो ॥
लल पतमन पटतर हि कहे श्रा ॥ रघ
न अधर नयी अरुनाई ॥ विंबा फल
वधु पत्त जाई ॥ मुक्ततं दहिं लासि भा
लजावहि ॥ पक्षे सुमन बिनहि पटतर
पावहीं ॥ सीस जटा अनुसर बनाई ॥
भाल विसाल तिलक अति चाई ॥ ए
हि नरहरि मिलन हिमनरनुवीरा ॥ राम
नोह श्रोरपुत्रन समीरा ॥ दोहा ॥ वाम जा
ग विचीवनलिए अचिवे भराज ॥ वी
जमे नसवजाने अवनमपरे अभाज
॥ चौपई ॥ अवरेख सेन्या रहओ ई ॥ ॥१५

जलचर जाई परम सुहाई ॥ राम पीत श्रो न
मेत लिश्रा हा ॥ मिला अंग तन अरमें दा
हा ॥ अन्याते कवल दुप जाई ॥ नैन नूरि अं
सुपलु नाई ॥ वाजाई दिन फर वलाई
न्हो ॥ रितु जानि वास बरअन्हो ॥ जानि
कुज वर वीर होउ जाये ॥ देव अंस सवा
न रहोइ आये ॥ कि अंचोइन्ह कर असथा
ना ॥ देवसरि सम धुवन दुधाना ॥ पी
वमूकइन्ह कर विश्रामा ॥ चारि मास
निवसे जहं रामा ॥ बालि ज्यों हरामर
न मारा ॥ कहिहि सिरसो पेउ राज कर भा
रा ॥ तारा सोई पार के रानी ॥ जे कर सु
त अंगद अजि मानी ॥ सव वाला घप
पि कोहिम नाना ॥ सहंस कोटि कर
से कुल समाना ॥ सहस सकुमर अ
र्बुद हेक ॥ अर्वुद सहंस करवंद वि से
षा ॥ सहंस वृंद जो होय अमाला ॥ प
लपपते करपर माना ॥ असे पद्म
अठारह साजा ॥ वेवि गृह वहैउरा १७
म पेपाजा ॥ वीर वसन श्रो सतयन 9 10

लं॰ का

बिसाला॥ कै बुझे ठहै मौ ती कमाला
॥१८॥ ॥दोहा॥ हरसी साठ सहस अवल सहाय
मै मैसील॥ स्वेत छत्र सिर सोभित
यह राजा सुग्रीव॥१॥ यहि बिधि स
कल दिवाय सुसार न कपि जाहि
ग मै नरा बन काल बसि महा गर्ब
मद मूढ॥ सोरठा॥ फूलै फलै न बे
त॥ जदपि सुधा बरषहि जलद॥
मूरषि हृदय न चेत॥ जो गुर मिलै इ
विरंचि सत॥ चौपई॥ इह विचार
भी न्हार रघुराई॥ पूछा सब मत सचि
व बुलाई॥ कहहु वेग का करिय उपा
ई॥ जामवंत कह पद सिर नाई॥ सु
नि सर्वग्य सकल गुन रासी॥ सत
सिंधु प्रभु सब उर बासी॥ मंत्र क
हौ निज मति अनुसारा॥ दूत प
ठाइय बालि कुमारा॥ नीक मंत्र स
व के मन माना॥ अंगद सन कहे
कृपा निधाना॥ बालि तनय बुधि

लं॰ का

चले न सकहि पुकारी॥ एक एक सन
॥१७॥ मरम न कहही॥ समहित तास बल चु
पकरि रहहीं॥ नयउ मलाह तान ग
र मकारी॥ आवा कपि लै काजि न जा
री॥ अब धौं कहा करिहै करतारा॥ अ
ति सभीत सब करहि विचारा॥ बिन
पूछे मग देहि बताई॥ जहि बिलो
कि सो जाइ सुखाई॥ दोहा॥ गयउ सभा
दरबार मह सुमिरि राम पद कंज॥ सि
घ ठावनि इत उत चितई धीर बीर बल
पुंज॥ चौपई॥ तुरत निसाचर एक
पठावा॥ समाचार रावनहि जनावा॥
सुनत बिहसि बोला दससीसा॥ आ
नहु बोलि कहा कर कीसा॥ आइस
पाय दूत बहु धाये॥ कपि कुंजर
हि बोलि लै आये॥ अंगद दीख दसा
न न बैसा॥ सहित प्रान कजलगि
र जैसा॥ भुजा बिटप सिर शृंग समा
ना॥ रोमावली लता जनु नाना॥

बलगुनधामा॥ लंकाजाहु तात मम का
जा॥ बहोत बुझाइ तुम्हहि का कहऊं॥ पर
म चतुर मैं जानत अहऊं॥ काज हमार
तासु हित होई॥ रिपु सें करिहु बतक
ही सोई॥ सोरठा॥ प्रभु आग्या धरि सीस
॥ चरन बंदि अंगद उठेउ॥ सोई गुनसा
गर ईस॥ राम कृपा जा पर करहु॥ स्व
यं सिद्ध सब काजा॥ नाथ मोहि आद
र दयउ॥ अस बिचार जुवराज॥ त
न पुलकित हरषित भयउ॥ चौपई॥
बंदि चरन उर धरि प्रभुताई॥ अंग
द चलेउ सबहि सिर नाई॥ प्रभु प्र
ताप उर सहज असंका॥ रन बाकुरा
बालि सुत बंका॥ पुर बैठत रावन
को बेटा॥ खेलत रहा सो है गई भेंटा
बातही बात करष बढि आई॥ जु
गल अतुल बल पुनि तरुनाई॥ त
ही अंगद पह लात चलाई॥ गहि प
द पटकेउ भवनि भवाई॥ निशिचर
निकर देषि भट भारी॥ जहा तहा

मुष नासिका नैन श्रौर काना॥ गिरिधु
दरा बोल समाना॥ गयउ सभाम
न नैक न मुरा॥ बालितनय प्रतिबल
बा पुरा॥ उठे सभासद कपि कह देषी॥
रावन उर भय सो अति सेषी॥ दोहा॥
जथा मत्त गज जूथ महि पंचा न
न चलि जाहि॥ राम प्रताप सुमि
रि उर वैठ सभा सिर नाई॥ चौपई
कह दसकंध कवन तैं बानर॥ मैं
रघुबीर दूत दसकंधर॥ मम ज
नकहि तोहि रही मिताई॥ तव हि
त कारन आयउ भाई॥ उत्तिम कु
ल पुलस्ति कर नाती॥ सिव बिरं
चि पूजे बहु भांती॥ बर पाय
हु कीन्हे सब काजा॥ जीते हु लो
कपाल सुर राजा॥ नृप अभिमा
न मोह बस किंबा॥ हरि आनी
सीता जगदंबा॥ अब सुनु

लं॰ कि॰
॥१८॥

हासु नहु तुम मोरा॥ सब अपराध
छमेहु प्रभु तोरा॥ दसन गहहु अन
कंठ कुठारी॥ परिजन सहित संग
निज नारी॥ सादर जनक सुता क
रि आगे॥ यहि विधि चलहु सकल
भय त्यागे॥ दोहा॥ प्रनतपाल र
घुबंसमनि त्राहि त्राहि अब मोहि॥
सुनत राम वचन तव अभय करै
गे तोहि॥ चौपई॥ रे कपि पोच कब बो
लसि चारी॥ मूढ न जानहि मोहि सु
रारी॥ कहु निज नाम जनक कर भा
ई॥ केहि नाते मानियै मिताई॥
अंगद नाम बालि कर बेटा॥ तासों
कबहीं भई है भेटा॥ अंगद वचन
सुनत सकुचाना॥ रहा बालि बं
दर मैं जाना॥ अंगद तुही बालि
कर बालक॥ उपजेहु बंस अन
ल कुल घालक॥ गर्भ न गयहु

कुल इस होइ॥ अनुज हमार भीर अति सो
ऊ॥ जामवंत मंत्री अति बूढा॥ सो कि होइ
अब समर अरूढा॥ सिल्प कर्म जानहिं न
ल नीला॥ है कपि एक महा बल सीला॥
आवा प्रथम नगर जिहि जारा॥ सुनत
वचन कहै बालि कुमारा॥ सत्य वचन
कहु निसिचर नाहा॥ साचेहु कीस कीन्ह
पुर दाहा॥ रावन नगर अल्प कपि दहई॥
सुनि अस वचन सत्य को कहई॥
जो सत्य सुभट सराहेहु रावन॥ सो
सुग्रीव केर लघु धावन॥ चलै ब
हौतु सो बीर न होई॥ पठवा खबरि लै प
न कह सोई॥ दोहा॥ सत्य नगर कपि
जारेहु विन प्रभु आयसु पाय॥ फि
रि न गयउ सुग्रीव पहि तेहि भय र
हा लुकाई॥१॥ सत्य कहहि दसकंठ स
ब मोहि न सुनि कछु कोह॥ कोउ न ह
मारे कटक अस तो सन लरत जो सो
ह॥२॥ प्रीति विरोध समान सन॥ क
रिय नीति असि हाय॥ जौ मृग पति

बधमीद्रुअन्निचलपिअहै श्रोताहि ॥३॥
लं॰ का जदपिलघुताराम कहुँ तोहिवधैवड
॥२०॥ दोष ॥ तदपिकठिनदसकंठसुनि छ
त्रीजातिकररोष ॥२०॥ वक्रउक्तिध
नुवचनसरहृदयदहेउरिपुकीस ॥
प्रतिउतरसडसिन्हमनहुकाढतभ
टदससीस ॥२१॥ हसिवोलेउदससी
सतवकपिकरवडगुनएक ॥ जोप्र
तिपालहितासहितकरैउपायअ
नेक ॥ चौपई ॥ धन्यकीसजोप्रभु
निजकाजा ॥ जहँतहँनाचैपरिहरि
लाजा ॥ नाचिकूदिकरिलोगरिझा
ई ॥ पतिहितकरैधर्मनिपुनाई ॥ अंग
दस्वामिभगततवजाती ॥ प्रभुगु
नकसनकहसिएहिभाती ॥ मैगु
नगाहकपरमसुजाना ॥ तवकटुरटि
नकरौनहिकाना ॥ कहकपितवगु
नगाहकताई ॥ सत्यवचनसुन
मोहिसुनाई ॥ वनविध्वंससुतवधि
पुरजारा ॥ तदपिनतेकछुकृतअ २०
हंकारा ॥ इहिविचारितवप्रकृति

सुहाई दसकंधरमैकीन्हिढिठाई देखे
उँआइजोकछुकपिभाषा तुम्हरैला
जनरोषनमाषा जौअसिमतिपि
तुषाइहिकीसा कहिअसवचनह
सादससीसा पितहिषाइपुनिषा
तेतोही अवहिसमझिपराकछुमो
ही वालिविमलजसभाजनजा
नी हतौनतोहिअधमअभिमा
नी सुनिरावनरावनजगकेते मैनि
जश्रवनसुनासुनुजेते रावनएकसक
लवलगर्व जीतनचलेउसुरासुरस
र्व सागरउतरिपारसोगयऊ नारिवृं
दसोदेखतभयऊ तिन्हसनकहसि
पतिनमहिजाऊ कहहुकिआयउपुनि
सचरनाहू नवमोतिनहिजीतिसंग्रा
मा लैजैहौतुमआनिजथामा सु
नतवचइकजठररिसानी धाइच
रनमहिगगनउडाही गईधूरिध
रिधरिकअजोरा डारसिसिंधुमध्य

कि. ५ अतिजोरा॥ दोहा॥ गयउ अगाध अचेत लै
ग्रमरैनविप्रप्रसाद॥ सावधान उठि चले
॥२१॥ उपुनिरयुग्रदुहृघनविषाद॥ चौपई॥ इ
प्ररावनभी कहउ क्रहानी॥ जीतन बुम
हा अभिमानी॥ गहेनि ग्रर सीतबहु ब्या
पेउ॥ कुंपतिगात विकलान्नयुफिरेउ॥
बहुप्रकार सुनि ताहि सिखावा॥ गयउ
सो पुर फिरि लाजन आवा॥ बलिहि
जीति नइ क्रगयेउ पतालाला॥ राषा बा
धि ससि नहयसा ला॥ खेलहि बाल
क मारहि जाई॥ दया लागि बलि दयो
छुड़ाई॥ एक औरसिहसन्नुजदेषा
धायधरा जिमि जंत विसेषा॥ औ तु
कलागि नेवन लै आवा॥ सो पुल
स्त मुनि जाय छुड़ावा॥ बहुप्रकार
मुनि ताहि सिखावा॥ गयउ सो पुनि
फिरि लाजन आवा॥ दोहा॥ एक क
हत मोहि सकुच अति रहा बालि की
काष॥ तिन्ह मैं रावन कोन नर॥ स
त्यबदहि तजि माष॥ चौपई॥ सु॥ २५

कि. ५ न बालि तनय कुपेरे॥ दोहा॥ क्रहि गहे करप उ
वनसुत आनिधरे प्रभुपास॥ औतुक देष
॥२५॥ हि नाल कपि दिनकर सरिस प्रकास॥ रन
चौपई॥ पुहाक्रहत दसकंधरिसाई॥ धरि
मारहु कपि नाजन जाई॥ यहि विधि बे वे
ग सुन्नरसन धावहु॥ षाहु भाल कपि
जहाँ जहाँ पावहु॥ मर्कहि अंगभंग करि फे
रि दुलई॥ जीय तधरहु तापस होई॥ ना
ई॥ पुनि सकोप बोलेउ जुवराजा॥
गाल बजावत तोहि न लाजा॥ मारु
गारू आरि निलज कुलघाती॥ बलु
विलोकि विहरी नहिं छाती॥ रे त्रियचो
र कुमारग गामी॥ षल मल रासि मंद
मति कामी॥ सत्य बात जल्पसि दुर्व
दा॥ बहसि काल बसि निसि मनुजाद्
या॥ औ फल पावहुगे आगे॥ बानर भा
लच पेरन लागे॥ राम मनुज बोल
त इहबानी॥ गिरहि न तुब रसना अ
भिमानी॥ गिरिहइ रसना संसय ना
ही॥ सिरन्ह समेत समर महि माही॥
सोरठा॥ सोनरक्यो दसकंध बालिब २५

म ञास ॥१०॥ जिनके बलकर गर्व तोहि
ऐसे मनुज अनेक॥ खैहहिं निसचर दि
॥२१॥ वस निसि मूढ़ समझि तजि टेक॥ चौ
पाई॥ जब तें कीन्ह राम की निंदा॥ क्रो
धवंत जब भयउ कपिंदा॥ हरि हर नि
दा सुनै जो काना॥ होय पाप गोघात स
माना॥ कटकटान कपि कुंजर भारी
दोउ भुजदंड तमकि महि मारी॥ डोल
त धरनि सभासद खसे॥ चले भाजि भय
मारुत ग्रसे॥ गिरत दसानन उठे सँ
भारी॥ भूतल परे मुकुट षट चारी
कछु तेहि लै निज सिरनि सँवारे॥ क
छु अंगद प्रभु पास पबारे॥ आवत
मुकुट देखि कपि भागे॥ दिनहीं लू
क परन विधि लागे॥ की रावन करि
कोप चलाये॥ कुलिस चारि आवत
अति धाये॥ प्रभु कह हँसि जनि हृद
य डराहू॥ लूक न असनि न केतु न राहि
हू॥ ये किरीट दसकंधर केरे॥ आव

पाई॥ चहत टरहि बैठहि सिर नाई॥ पुनि उ
ठि झपटहि सुर आराती॥ टरै न कीस चरन
॥२६॥ एह भाँती॥ पुरुष कुजोगी जिमि उरगा
री॥ मोह बिटप नहि सकहि उपारी॥
दो०॥ भूमि न छाड़त कपि चरन देख
त रिपु मद भाग॥ कोटि बिघन तें संत
कर मन जिमि नीति न त्याग॥३४॥ कोटि
न मेघनाद सम सुभट उठे हरषाइ॥ झ
पटहि टरै न कपि चरन पुनि बैठहि सि
र नाइ॥ चौपाई॥ कपि बल देखि सकल
हिय हारे॥ उठा आपु जुबराज प्रचारे
गहत चरन कह बालि कुमारा॥ मम
पद गहे न तोर उबारा॥ गहसि न राम च
रन सठ जाई॥ सुनत फिरा मन अति स
कुचाई॥ भयउ तेजहत श्री सब गई॥
मध्य दिवस जिमि ससि सोहई॥ सिंघा
सन बैठा सिर नाई॥ मानहु संपति सक
ल गँवाई॥ जगदातमा प्रानपति रामा
तासु विमुख किमि लह विश्रामा॥ उमा राम
की भृकुटि विलासा॥ होय बिस्व पुनि

छो जेइ ऐकसर ॥ बीसहु लोचन अंध
धग तव जन्म कुजाति जड़ ॥ तव श्रोनि
त की प्यास ॥ रावत राम सायक ब्रनि ब्रर ॥ त
जु तैं जिआ की आस ॥ अर जल्पसि निस
चर केठी ॥ चौपइ ॥ मैं तव दसन तोरिबे
लाइक ॥ आइस मोहि न दीन्ह रघुनाय
क ॥ असि रिस होति दसौ मुख तोरौं ॥ लंक
हि लै समुद्र महि बोरौं ॥ गूलरि फल स
मान तव लंका ॥ बसहु मध्य तुम्ह जं
तु असंका ॥ मैं बानर फल खात न बा
रा ॥ आइस पै नहि राम उदारा ॥ जुगति
सुना रावन मुसकाई ॥ मूढ सिखेउ कह
बहुत ठगाई ॥ बालि न कबहु गाल अ
समारा ॥ मिलि तपसिन्ह मैं भयसि ल
बारा ॥ साचेहु मैं लबार भुज बीहा ॥ जौं
न उपारेउं तव दस जीहा ॥ राम प्रता
प सुमरि कपि कोपा ॥ सभा माझ पन
करि पद रोपा ॥ इउ जौ तव आरि सव
ल बाता ॥ हरषि उठेउ जहां तहां ज
रमाना ॥ रारन हीं अरि बल विपुल उ

लं॰ का ऐसन तोहि अछै तिन मारे ॥ जारि नगर स
॥२७॥ ब की न्हासि दुरा ॥ कहां रहा बल गर्व तुम्हा
रा ॥ अब पति वृथा गाल जनि मारहु ॥ मो
र कहा कछु हृदय विचारहु ॥ अगजगना
थ अतुल बल मानहु ॥ पति रघुपति
नृपति जनि जानहु ॥ बान प्रताप जा
नि मारीचा ॥ तासु कहा मानेहु नहि नीचा ॥
जनकसभा अगनित महिपाला ॥ रहे तुम
हु बल विपुल बिसाला ॥ भंजि धनु
ष जानकी विवाही ॥ तब संग्राम जितै
उ किन ताही ॥ सुरपति सुत जानै बल
थोरा ॥ राखा जीअत आखि इक फोरा ॥
सूपनखा की गति तुम्ह देखी ॥ तदपि हृद
य नहि लाज बिसेषी ॥ दोहा ॥ बधि बि
राध खर दूषन ही लीला हते कबंध ॥ बा
लि एकसर मारेउ तेइ जानहु दसकंध ॥
चौपइ ॥ जेईं जलनाथ बंधाएउ हेला ॥
उतरे प्रभु दल सहित सुबेला ॥ का
रुनीक दिनकर कुल केतू ॥ दूत पठा
य तव हित हेतू ॥ सभा माझ जिन तव 16

बहिनाम॥ तनतेकुलिसकुलिसतनकरई
तासदूतपनकहहिमरई॥ पुनिकपिकही
नीतिविधिनाना॥ माननताहिकालनिय
राना॥ रिपुमदमथिप्रभुसुजससुनायो
यहकहिचल्यो बालिको जायो॥ हतौं नष
तषितलाइ षिलाई॥ तोहि अवहि काकरे
वडाई॥ प्रथमहि तासु तनय कपि मारा
सो सुनि रावन भयउ दुषारा॥ जातुधान
अंगद पन देषी॥ भय व्याकुल सब भाग
विसेषी॥ दोहा॥ रिपु बल धर्षि हरषि
कपि बालि तनय बल पुंज॥ सजल सु
लोचन पुलक तन गहे राम पद कंज॥
१॥ साझ जानि दससीस तब भवन गय
उ बिलषाई॥ मंदोदरी निसाचरहि
बहुरि कहा समुझाइ॥ चौपई॥ कंत स
मुझि मन तजहु कुमतिही॥ सोह न सम
र तुमहि रघुपतिही॥ रामानुज लघु रे
ष षिचाई॥ सोउ नहि नाघेउ असि मनु
साई॥ पिय तुम ताहि जितव संग्रामा॥
जाके दूत केर अस कामा॥ कौतुक सिंधु
लाघि तव लंका॥ आयउ कपि केसरी अ
संका॥ रषवारे हति विपिन उजारे॥

मद्धारा॥ रिपुसन जुध करो इक वार॥ पा
रर सतवल सी वंड्डी॥ कुमंद आदि कपि न
य॥ मयंद गयंद धुम्र केत नर॥ नारी सं
ग सुनर दुगंध॥ उत्तर द्वार जाहु सब भाई
लकौ तुला है कंत॥ ॥ नामि सुषेन के
सरी नाम्ना अरक सुमंद हि वीर॥ वसंत इं
द्र नील नर नारी संग सुनर हनुमान॥ पू
रव द्वार जाहु सब भाई करो असुर सन
जुध॥ ॥ पंच सुचांग वीर दोउ भाई॥ नि
ल नाम सैना वंदर दुरधारिस न कपि वीर
जामवंत कपि वृध॥ संग सुनर जे वरज
द्धिन द्वार जहा सव कोउ॥ राक्षस देव
जुध सव काल॥ मुनि कपिलिंग नाद
करि धाये॥ गर्जहि तर्जहि भाल कपीसा॥
जै रघुवीर कोसलाधीसा॥ जानत परम
दुरग अति लंका॥ प्रभु प्रताप कपि च
ले असंका॥ घार रोप करि चहु दिस घे
री॥ मुषहि निसान वजावहि भेरी॥ दोहा॥
जयति राम जय लछिमन जय कपीस सु
ग्रीव॥ गर्जहि केहरि नाद कपि भालु म
हावल सीव॥ चौपई॥ लंका भयउ कुलाहल

हलचारी॥ सुनेषु दसासन नन अति अहंका
री देखहु बानर भेरहि धाई॥ वह मिलि साच
र सैन बुलाई॥ आए सीस काल के प्रेरे॥ धु
धावंत रजनिचर घेरे॥ असकहि अंगद हा
स सठ कीन्हा॥ गह वैठे अहार विधि दीन्हा
सुनत स्रवन चारि हु दिस जाहु॥ अपर
मल्लै दस अरअत धाई॥ पश्चिम द्वार जहा
सव जाई॥ मालवंत जहँ निसाचर॥ प्रा
ल नैम सम वीर॥ सव मिलि जावहु तहाँ
र॥ धावहु आजु वनचर समुदाई॥ प्रेह
स्त अं कंपन सुत दा वीरा॥ पुरव घार
जाहु दुहु सब जाई॥ करौ कपिन सग जु
ध॥ इंदुजीत जीत मुष ऐ कहाना॥ द
छन घार जाहु बलवान॥ धरि धरि नी
ल कपी मन घहु॥ उमा रावनहि अस
अभिमाना॥ जिमि टीटी गजच घग सूत
उताना॥ चले निसाचर आयसु मांगी॥
गहि कर भिंडिपाल अरु सांगी॥ तोम
र मुदगर परिघ प्रचंडा॥ सूल कृपान
परसु गिरि षंडा॥ जिमि अरुनोपल

लसाथा॥ करिनि वरूथ हि मृगपति जाथा॥ अं
गद हनुमत अनुचर जाके॥ रन बाकुरे वीर
अति बांके॥ तहि प्रहिथीय पुनि पुनि नरम
हहू॥ सुधासान मभिता मदवहहु॥ अहह अ
नुजित राम विरोधा॥ कालविवस उपजा
मन वोधा॥ काल दंड गहि काहु न मारा॥ ह
रै धरम बल बुधि विसाला॥ निकट का
ल जेहि आवै साई॥ जेहि भ्रम होइ तुम्हा
री नाई॥ दोहा॥ दोय सुत मारे दहेउ पु
र अजहु पूर पिय देहु॥ कृपासिंधु रघुवीर
भजनाथ भजहु रघुविमल जसु लेहु
॥ चौपई॥ नारि वचन सुनि विसष समाना॥
सभा गयउ उठि होत विहाना॥ वैसा जाइ
सिंघासन फूली॥ अति अभिमान त्रा
स सब भूली॥ इहा राम अंगदहि बुलावा॥
आइ चरन पंकज सिर नावा॥ अति आ
दर समीप वैठारी॥ बोले बिहसि कृपा
ल षरारी॥ बालि तनय इ कौतिक मो
ही॥ तात सत्य कह पूछौ तोही॥ रावन जा
तुधान कुल टीका॥ भुजबल अतुल
जासु जग लीका॥ तासु मुकुट तुम्ह चा
रि चलाए॥ कहहु तात कवन विधि पाए॥

लंका सुनुसर्वग्यप्रनतसुषकारी॥मुष्टरमलौहिनु
पगनचारी॥सामदामअरुदंडविभेदा॥न
॥२८॥ पउरवसहिनाथकहवेदा॥नीतिधर्मके
वचनसुहाए॥असजियजानिनाथपग
हिआए॥दो०॥धरमहीनप्रभुपदविमु
षकालविवसदससीस॥तहिपरहरिगुन
आयहुसुनहुकोसलाधीस॥१॥परमच
तुरताश्रवनसुनिबहसेरामउदार॥समा
चारपुनिसबकहेगढकेबालिकुमार॥
चौपई॥रिपुकेसमाचारजबपाए॥रामस
चिवसबनिकटबुलाए॥लंकाबांकीचारि
दुआरा॥केहिविधिलागेअकरिएविचारा॥
तबकपीसरीछेसबभीषन॥सुमरिहद
येदिनकरकुलभूषन॥करिविचारति
नमंत्रदृढ़ावा॥चारिअनीकपिकटकब
नावा॥जथाजोगसेनापतिकीन्हा॥जू
थपबोलिसकलतबलीन्हा॥प्रभुप्रता
पकहिसबसमझाए॥जेजोवीरसकलसु
हाई॥गजगवाअसहोरकपिदंढार॥सं २८
गसुनरगजराज॥मालवंतअपिस
रनलनीला॥सबमिलिजावहुपछि

लंका गर्जतजनुप्रलयकेवादले॥मर्कर
विकटरनरजुरतकटुतनलुरततनु
॥३५॥ जर्जरतदे॥गहिसैलतेगढपरचला
वहिजहसोतहांनिसचरहठे॥दोहा॥
मेघनादसुनिश्रवनअसगढपुनि
घेराआइ॥उतरिदुर्गतेवीरवरसु
नमुषचलोवजाइ॥चौपई॥कहा
कौसलाधीसदोउभ्राता॥धन्विसक
ललोकविष्याता॥कहनलनीलदु
बिदसुग्रीवा॥अंगदहनूमानबल
सीवा॥कहाविभीषनभ्राताद्रोही
आजिसबहीहरिमारौओही॥असकहि
कठिनवानसंधाने॥अतिसैबानक्रो
नेलगिताने॥सरसमूहसोछाडैला
गा॥जनुसपछधावहिवहुनागा॥
जेहतहँपरतदेषिअहिबानर॥सन
मुषहोयनसकहितेहिअवसर॥जागे
लेयव्याकुलकपिरीछा॥विसरीसवै
जधकीइछा॥सोकपिनाभालतरन

धिपरमसनेही ॥ ताके वचन नवानस
मत्ताके ॥ करिया मुष करि जाहु अभागी
वूटनरूलि नतमारत तोही ॥ अवज
लै तैन दिखावसि मोही ॥ तेई आपनै म
नअस अनुमाना ॥ वधौ चहत यह
श्री भगवाना ॥ सोवृति गयउ मह
तुइ वीरा ॥ तव सकोप बोले घनना
हा ॥ कौतुक प्रात देषिहु मीरा ॥ अ
रिहउ वहोत मह अव घोरा ॥ सुनि सु
त वचन नन रोसा आवा ॥ प्रीति सम
त अंक वैसावा ॥ करत विचार नयउ
तिन सारा ॥ लाजे कपि पुनि चहुदु
आरा ॥ कोपि कुकपिन घोर गढ घेरा ॥
नगर कोलाहल नयउ घनेरा ॥ विव
धायुध धरि निसचर धाये ॥ गढ ते
पर्वत सिषर ढहाये ॥ छंद ॥ ढहे मह २८
धर सिषर कोरिन्ह ॥ विविधि विधि
गोला चले ॥ घहरात जिमि पविपात

क्रीन्हेसि ॥ प्रानसुधन लछिमन करही न्हेसि
रनतीरथ जाचक विधि चीन्हेसि ॥ चौदह नु
॥५२॥ अन जोग करि लीन्हेसि ॥ रनतीरथ जाचक
विधि चीन्हेसि ॥ प्रानसुधन लछिमन करही
न्हेसि ॥ अवनु उचित विरत रत है अपहा
रा ॥ तेहि पै अधिक जो हरस तुम्हारा ॥ जानि अ
सहु मरव सतसाधी ॥ मिलव तुमहि जस
मिलव समाधी ॥ दोहा ॥ निरमलगति अ
वसर नयउ सुनि अस त्य रघुवीर ॥ तुमहि मि
लै नहि होय नव जथा सिंधु गति नीर ॥ चौ
॥ मन श्री जान न हार सुदेवा ॥ नवसागर ना
थहि अह षेवा ॥ लीनै दूरि षनेअ पीस वुला
ई ॥ मेघनाद सिर दीन्ह मगाई ॥ पाइ केतारथ
मा मिसि आपु ॥ मिसविरह संनव परतापु
अंचल पोछि ति मुष की धूरी ॥ कहि मम प्रान
सीजीवनि मूरी ॥ देषि कहत सदेह सुग्रीवा
नुज महि लिषइ सो मोहि न सीवा ॥ हसेउव
रनन उतियय यहसाची ॥ लेत सनिसाचरमा
यानाची ॥ कतइह ग्यान मत अनुजगावै 20
जो मुनिवर साधन हु न पावै ॥ प्रनु अस अ ५८

तुमअंतरजामीजगवाना॥प्रभुताआदिमध्य
अवसाना॥करुनावचनसुनतरघुबीरा॥पुल
करोमनयसिथलसरीरा॥देउजिवाइनोरघ
तिआजू॥जंजकलंकअकलपसतराजू॥द्य
हिसोचअवमनहरषही॥तुरतभवनअ
पनैफिरिजाई॥सुनिअससत्यसिंधुकीबा
नी॥मनमहवचेनचरचमूडरनी॥प्रहिन
सकैकछुप्रभुरुषदेषी॥कहाअरिहहिअर
तारअलेषी॥सीयसोचअरफलनहिहो
इहि॥जोअरिकेपारामकहिजोइहि॥दोहा॥
रावनविभीषनलंकअअरअरिहहिप्रिहिवि
धिनाई॥समजिवैरघननादजवगहिहि
सरासनजाई॥चौपई॥मुषरुषलषिअपि
कौसलजाना॥प्रनतपालजगवंतसुमा
ना॥देषिवहोतरघुवरकौछोह॥विनयकर
तरसबंधपतोह॥तुम्हउदारदेवसबला
ईअ॥करुनामयदेषिअरघुनायक॥मे
हुविचारकीनामनमाही॥जीवनतेयह
मरनसिराही॥जितिजंवललोकपवसि

अतिपुरानअहअक्षापसंगा॥नवहिविरं
चिमतेसजाहिअह॥लोचनगोचरहोइअ
हीअहि॥जनआरतिभंजनअहजोहित
भवसागरतारअहेवोहित॥दोहा॥प्रनत
पालविरदावलीजिन्हचरननअवाधि॥
सोचहरनिसंमयहरनिअरनिसुमंगल
षानि॥चौपई॥करजोरेअंगदहनुमाना
दुविदमयंदसुमदवलवाना॥जामवंत
कपिपतिवलसीला॥रिछजसुषेनसहि
तनलनीला॥महावीरवानरसवराज
हि॥लषनविभीषनदुहदिसभ्राजाहि॥
मितभावीसर्वोपसुसेवक॥विनवहिरुष
रघुनंदनदेवक॥सजोमध्यसोजितरघु
नंदन॥कीनविमफलनिरविविजआ
पन॥करतदंडवतसीसधरिधरनी॥
सोचरितकथाविभीषनवरनी॥पुत्रवधू
हसवंधरकीहे॥पतिदेवतसुलोचनातीय
है॥मेघनादकीनारिसुसीला॥यहगतिस
वाविरोधकैलीला॥दोहा॥मेघनादपति

नुजहि चालि बस मोड़सि ओहि ॥ महा
राज रघुवंस मनि जाचन आई तोहि ॥ चौ
॥५८॥ ॥ करत प्रनत आहर नहि थोरे ॥ कर
न बचन कहत कर जोरे ॥ छंद ॥ मैं नारि
अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु ज
न सुखदाई ॥ राजीव बिलोचन भव भ
य मोचन पाहि पाहि सरनै आई ॥ मुनि
मोहि उपदेसा अति भल कीन्हा परम
अनुग्रह मैं माना ॥ देखेउं भरि लोचन
हरि भव मोचन इहै लाभ संकर जाना ॥
बिनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न
मागौ बर आना ॥ पद कमल परागा र
स अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ॥
यह भांति सुनेना [illegible] ना बार
बार हरि चरन परी ॥ जो अति मन भा
वा सो बर पावा चरन नाउ रज सी सध
री ॥ दो ॥ अस प्रभु दीनबंधु हरि कारन
रहित कृपाल ॥ तुलसीदास सठ ताहि भ
जि छाड़ि कपट जंजाल ॥ चौ ॥

प्रीति कहै को ॥ ललकत मन परतर
हित है को ॥ देखति अधर निकी असु
नाई ॥ बिंबा फल बंधु कल जाई सु
कतुहहि नासिका लजावहि ॥ छ्यके
सो कवि नहि परतर पावहि ॥ दो ॥
छबि मय गुन मय तेज मय राम
उदधि अवगाह ॥ जहा न पावहि पा
र सुर कोविद नि अकर थाह ॥ चौपई
चकुटि विकट कपोल सुहाए ॥ सीस
जटा कै मुकुट बनाये ॥ भाल विसा
ल तिलक जुत सोहई ॥ ध्यान सम
य मुनि मानस मोहई ॥ वलकल
वसन तून कटि बांधै ॥ करसर सु
भग सरासन कांधै ॥ वीरासन आ
सन मृग छाला ॥ नव पवित्र वपु
सून कै माला ॥ चरन सरोज बर
नि नहि जाई ॥ जहा मुनि मधुकर
सदा लुभाई ॥ प्रगट भई ते घल ते गंगा

रवीनरकुल पायउँ ॥ विरहराम ल
छिमनअरघूरिऊँ ॥ विनअलेसलं
ओगढदृरिऊँ ॥ जुगजुगओरतिरहे
उठमारी ॥ अरतनअतह मलुचव
नचारी ॥ दोहा ॥ इहिविधिचारुविचा
रुअरिदेहीअमनमाहि ॥ नयउआज
रघुराजअरवातदूसरी नाहि ॥ चौ. पइ
वेठतअरकअतिहिसवचाई ॥ अन
चीन्हाजिमिपरघरजाई ॥ आगेजा
इदेषिरघुवीरहि ॥ छविमयस्याम
लगोरसरीरहि ॥ मअरतअनअछ
विहिजनुनिंदत ॥ धनुसोजनम
हिमाजोवंदित ॥ मत्तगयंदसुनि
जुजदंडा ॥ धनुषवानअसिधरनि
प्रचंडा ॥ उरविसालअतिउन्नतकं
धरा ॥ कंवुकंठरेषात्रयसुंदर ॥ मुषछ
विकीउपमाकविजोहई ॥ ससिसरो
जसमकहनसहई ॥ दसनपातिअी

सकोच आनहिछिनमाजी ॥ होइगलान
हिआजूकचूषन ॥ समयहीनगनगम
गनिदूषन ॥ देअनारिव्रतरघुपतिके
रा ॥ लषनसुजससतैइसुनोघनो ॥ घनेरा
हेपुनिसुसरविनीघनतोरा ॥ वालिसुव
नहेवालकमेरा ॥ जामवंतमंत्रीसुग्री
वा ॥ कुविदमयंदमहावलसीवा ॥ जा
निअवलचयहनमंता ॥ सिवसरूप
जयहरनगवंता ॥ सहानीतिरतराम
नरेसा ॥ तहांजातकहुकवनअलेसा
॥ दोहा ॥ विदततोहिपतिजजालिषत
लीधिमनरामप्रभाव ॥ मैहुसुरषितअ
हेउअवअवविलंवजनिलाव ॥ चौ
पइ ॥ सुनतसासुमुषहितअीवानी
जाइरामपहयहमतआनी ॥ वारवा
रचरननिसिरनाई ॥ वोलेतनइले
छमनरघुराई ॥ देषाअरकचालअ
पिअरी ॥ सिंधसुवेलिमहीधरघेरी ॥

लं॰ ४॰ ऊभयेइ मनहु मनोहर दूसर। हरिलपं
॥५५॥ गक्रपि धूमिल धूसर। लछि मनसे
ससु अंक्रसीस धारि। क्रर क्रजलछि
सोहत राघव हरि। अछय बरततहा
बेहु बचीषन। असमु जैती अतिसु
नेहनहीषन। दोहा। देषतहरष
सलोचना धीरज धरति बहोरि। म
हराज रघुवरहि श्री विनय सुनायु
हिमोरि। चौ॰ ५३। वानर सकलहु
ठ असबोली। अरिपुरतै आवतिहै
डोली। जानि परत रावन अबबूझा
नई मति मेघनाद अबजूझा। लठत
जिसीत हिहीन्ह पठाई। तजहु सोच
अवमिटी लराई। जेहि लगि प्रभर
कीन्ह पर आगी। बाचे उसेत हेतजे
हि लागी। सो सीता जो विन अमपाई
जानविधा अनकूल अघाई। विज
य राम सुग्रीवहि आषहू। सुजसवी ५५

मलोचना गही चरन सिरनाई। राघि
नुजा घननादकी करुना बचन सुना
ई। चौ॰ ५४। तुमहि अछत असहाल
हमारी। सुघनजिनये सोक अधिका
री। तन्नतल मगनुज समगहपरी
संसय देखि दीन्ह करषरी। लिषौरा
मलछिमन महिमाउन्ह। कमसो
सबविधि कथा कहीतिन्ह। हमिसी
रहीवा विगुनगाथा। जरोउ संगजो
पावहु माथा। रनकबंध नुजसमग्र
हआई। सिरतेलेजहा नरेस होउना
ई। करि असु जतन मिले मोहि सीसा
तुम्ह सर्वग्य चराचर ईसा। सुनतकु
लिससम गिरा बधूकी। कहु अहमो
हिसमान जगजोधा। दोहा। रामल
षन सुग्रीव नल नील दुविद हनुमं
त। माधविन्हीषन रिषन अे आदि
उमारितु रंत। चौपइ। अबतै रहेउ
नरोसानारी। कुंभकरन घननादसु

रारी॥ मह आमिलगि औन्हनजूझी॥
इनसबन्हे परसारथवूझी॥ मृष्टेतेन
रवानरन्हे मारे वातसुनतबढिलाज
हमारै॥ जिनतिन्हओनवीरमतइन्है
हौ॥ असिदुरदसाओन्हअपिजिन्हओ
काढिसोचकलवधूपतोहू॥ जान
हिपुनसमानजनिमोहू॥ पुनिवि
लेवकरियघरीचारी॥ देखिहिमो
रनथेअरनारी॥ आनहीसबवस
त्रनकेरे॥ विनप्रयासलागिहैनवे
रा॥ लोगवहिजनुपराकतलोगा॥
नतअतनिसचरवनचरजोगा॥
दो॥ मेरुउकारिनिहारिनेधराधरहि
करिवीच तेनरघायमसअसिसु
औलंकरिलतानीच चौपई॥ कोध
वेसप्रगरवलवोलहि॥ हृदयसोअत
रत्रचलनफोलई॥ समाधाननहि
मानतवोही॥ सुनिप्रलापपरतोष

॥चौपई॥ इतनाकहमंदिरमहआई॥ दे
षतिमनिगनधनअधिकाई॥ सुरपति
नवननपरतरताही॥ जहारिधि
सिधिविधिसहितकमाही॥ देषतिवि
षयमिविआरचेवनाई॥ नृजचढा
इपहिराववनाई॥ आपुनचढिस
नईपुनिआई॥ सुरदुर्लभसुषस
दनविहाई॥ वीतरागजिमितजेवि
षयमन॥ सहसनातिपत्तिपदला
गउमन॥ सुकसारिआसलोचनाज्या
ये॥ कनिकपिंजरनिरापिपठाये॥
व्यापुलकहहिकलासनैना॥ सुनि
धीरजपरहरैसुजेमन॥ नाटवि
कलघगमृगायिहिंनाती॥ अपर
दिसकैसेकहजाती॥ प्रजालोगसंग
सवलागे॥ प्रेमउमगिलोचनज
लपागे॥ दोहा॥ वाजनलागेनिसा
नघनटोलदुंदनीनेरि॥ पुरज

लं.क्रा नपरिजनसंगसवचलेपालकीघे
रि॥चौपई॥देषिनीरदसअंधइआ
॥पं२॥ रै॥सजमनएसववीरपचारे॥जा
नहिअरअरिपुनकीआई॥असस
स्त्रअरधरहनधाई॥धनुषचढाई
तरकसकरिवांधहि॥गहिअसिच
र्मसमरवरकांधेहि॥तोमरपरसु
प्रचंडगदागहि॥रोषतचोष्रेसूल
सत्रीलहि॥मारुमारुधरुधरुकह
धावहि॥प्रगरदसाननविजयसु
नावहि॥गरजितरजिअहिगिरधा
नीरा॥समरजयेअरनिसचरवी
रा॥निपरहिनिकरपालकीआई
चीन्हसकलजरहेलजाई॥देषि
जुझरिनागपतिकंन्या॥सतीसिरो
मनिजनुअनधन्या॥दोहा॥धरपा
लदसअंधरहिसमयसुनाइनि
जाइ॥जाईरजायसुवेगहीलोहसे ५२
लाहिवलाइ॥५॥तिहिअवसरहि

यद्यविमयजोही॥हेमसिंघासनसोहति
बाला॥सेवहिविद्याधरतियमाला॥पूज
हिविविधविनयअहिताही॥सुषप्रमोद
मोसअैसलहई॥तहांपतिजापरियवि
नाती॥मनहुसकलसुषनरकीप्राती
॥६॥ तहांदलदासीदेषिअरि॥ओनअ
वतनुजदंड॥नमहुसमरआचर्यम
य॥मनहुअपंडकलवंड॥[illegible] सु
निअरिसकलसषीमुषवेना॥तजिदुलिह
रबी सूचकअसुभदहिननजकरकी
होतमलारनरावनमारहि वीरधुरीनमो
रषीयनामहि सकलसुरासुरसकहिन
जूझी विधिवामतापरइनहिवूझी इ
तनामलगईचलिआपू पतिनुजलषी
मरिओहिविलापू अंकनमनिगनभूष
नसोई महाविटपसमआननहोई हे
षतिमनहिनआवनितेही तासुप्रभाव
सुनेहुपहेलेही नीदनारिजोजनपरि

हरई बारह बरस तासु अनुसरई ॥ दोहा ॥ अरि
तेअ॥ बिचार मन ठीक है मै पति देवत नारि ॥ जु
॥५०॥ जअति मेरहि मम दुचित ईसु निअर हीन्ह
पसारि ॥ चौ ॥ लखि रूप तासु मबौ उठि
धाई ॥ तुरतहि बोजि घरी लै आई ॥ हीन्ह
हाथ पर मनि अंगनाई ॥ लिषत लषन
श्रीरति हृदय चिराई ॥ नीदनारि भोजन सत
करि अ ॥ तजै तासु महि माय ह घोरि अ ॥
अछय अबोध अज अबिनासी ॥ अतुल
अमित घट घट अबासी ॥ प्रगटहि पाल
हि पुनि जग हरही ॥ त्रिगुन रूप त्रये मू
रति करई ॥ जो कालहु कर काल चतुर अर
बरन तमुज ससार हासंभ र ॥ लीला तनु
सुर सेवक हेतु ॥ जासु नाम भवसागर से
तू ॥ मुनि मन पुंडरीक जाके घर ॥ बचन बि
वेक बिचार बुधि पर ॥ दोहा ॥ कोरि कल
प बरनत निगम आगम जासु गुन गाथ
तेम सरीर जड जीह बिन कोबर नैल बि ५०
हाथ ॥ चौप ३ ॥ मम सिर गयउ दूर सर घु

गए धाये हति त्रसूल उरधार निगिरा
ये ॥ प्रचुर करि छाडेसि सूल प्रचंडा ॥ सरत
ति कातत अनंत जुग खंडा ॥ उठि बहोरि म
रुत जुवराजा ॥ हतहि कोप तेहि घाव न
बाजा ॥ फिरे बीर रिपु मरै न मारा ॥ तब
धावा करि घोर चिकारा ॥ आवत दे
खि कुध जनु काला ॥ लछिमन छाडे
बिसष कराला ॥ देखिसि आवत पबि
सम बाना ॥ तुरत भयउ षल अंत
रध्याना ॥ बिबिधि बेष धरि करै लरा
ई ॥ कबहु कि प्रगट कबहु दुरि जाई ॥ त
बचे सूल छारेसि लछिमन पर ॥ कारिश्री
न सत षंडथर निधर ॥ सिबस्वलो
सो पुनि थयौ ॥ राम अनुज सो कारि सि
सायौ ॥ दोहा ॥ आवध बिबध छाडि ते
ही रज सम कातकृति इस ॥ हरघ बिब
स अपि रीछ सब बुधि सहित सुर ईस ॥
चौप ३ ॥ बिबुधायुध सो छाडेला मो ॥
रन प्रानन छूटै जिमि नागा ॥ राम अनु

ने श्रु ॥४८॥

जसरसिंधुसमाना॥ कुमाग्रसेतधूर
हि अभिमाना॥ लछुमन ऋसमनम
हिठावा॥ ऐहि पापीहि मैव होतलि
लावा॥ सुमरि कोसलाधीस प्रतापा
सरसंधान कीन्ह करि दापा॥ छेडिय
जिमि रवि तेज समाना॥ फुरतम
नहु व्याल अनुमाना॥ छांडा बान ता
स तनु लागा॥ सीस भुजा प्रारेउ न
प नागा॥ सीस परेउ धरनी जब हुई
भुजा दाहिनी नच्छ सोगई॥ घनस
मान सो गर्जि अभागा॥ मरती बार
कपट सब त्यागा॥ दोहा॥ राम अनुज
कह राम कह असकहि छाड़सि प्रान
धन्य धन्य तव जननि कह अंगद हा
हि हनुमान॥ चोपई॥ जो जम कहेहु
उकजम हेरा॥ हरि द्रोही सुत समर पु
चेरा॥ महिमा अतुल महा बल सीव
जास प्रताप अनय पर ग्रीवा॥ भुज
बल सुर नायक वस कीन्है॥ चौदह
भुवन जीति जस लीन्है॥ रिपु तस ल ४८

[illegible]

ग्नेचन॥ वचन कुरमनमनकपरताजि
ताजि हराम रनधीर॥ जाहु नलि जापर
सुरभी ति नयउ काल वस बीर॥ चोप
ई॥ वंधु वचन सुनि फिरा कचीमन॥
आये जहां त्रैलोक्य विभूषन॥ नाघ चा
धसकार सरीरा॥ कुंभकरन आवत रन
धीरा॥ इतना कपिन सुना जव काना
किलकि लाय धाये बल वाना॥ लहे उ
पारि विटप अरु भूधर॥ कटकि ताल
कपि इक इक वारा॥ मुरे न मन तौ टरै
न टारा॥ जिमि गज अर्क फल नि कुर
मारा॥ तव मारुत सुत मुठि का हानी॥
परा धरनि व्याकुल सिर धुनि हु॥ पुनि
उठि तेहि मारे हनुमंता॥ घूर्मित भूतल
परेउ तुरंता॥ पुनि नल नीलहि अव
निपछारसि॥ जहं तहां परवि परवि
भट डारसि॥ चली वली मुष सैन परा
ई॥ अति भय त्रसित तन कोउ समुहाई॥
दोहा॥ अंगदादि कपि मुरछित करि सम
मेत सुग्रीव॥ काष दावि कपि राज क
हं चला अमित बल सीव॥ चौपई॥
उमा करत रघुपति नरलीला॥ खेल 33

लें अ गरुड़ जिमि अहिगन मीला॥ भ्रुकुटि भं
ग जो कालहि खाई॥ ताहि कि सोहै औसि ल
॥४२॥ राई॥ जग पावनि कीरति बिसतरिहैं॥ गा
इ गाइ भवनिधि नर तरिहैं॥ मूर्छा गे
मारुतसुत जागा॥ सुग्रीवहि तब खो
जन लागा॥ सुग्रीवहु कै मूर्छा बीती
निबुकि गयउ तेहि मृतक प्रतीती॥ का
टेसि दसन नासिका काना॥ गर्जि अ
कास चलेउ तेई जाना॥ गहेसि चर
न धरि धरनि पछारा॥ अति लाघ
व पुनि तेई उठि मारा॥ पुनि आयउ
प्रभु पहि बलवाना॥ जय जय कार
ति कृपानिधाना॥ नाक कान काटी
सोइ जानी॥ फिरा क्रोध करि भइ
मन गलानी॥ सहज भीम पुनि बि
नु श्रुति नासा॥ देखत कपि दल
उपजी त्रासा॥ दोहा॥ जय जय रघु
बंस मनि धाए कपि दै हूह॥ एक बार
तासु पर छारे गिरि तरु समूह॥ चौ ४२
पाई॥ कुंभकर्न रन गर्जि बिरुधा॥ स

न्मुख चला काल जनु क्रुधा॥ कोटि
कोटि कपि धरि धरि खाई॥ जनु टीड़ी
गिरि गुहा समाई॥ कोटिन्ह गहि सरीर
सन मर्दा॥ कोटिन्ह मीजि मिलव महि
गर्दा॥ मुख नासा श्रवनन की बाटा॥
निसरि पराहि भालु कपि ठाटा॥ रन म
द मत्त निसाचर दर्पा॥ बिस्व ग्रसहि
जनु ऐहि बिधि अर्पा॥ मुरे सुभट सब
फिरहि न फेरे॥ सूझ न नयन न हि सु
नहि न टेरे॥ कुंभकर्न कपि फौज
बिडारी॥ सुनि धाए रजनिचर धा
री॥ देखी राम बिकल कटकाई॥ रिपु
अनीक नाना बिधि आई॥ दोहा॥ सु
नु सुग्रीव कपीस तुम्ह सम्हारेहु सना
इ सैन॥ मै देखौ खल दल बलहि बोले
राजीव नैन॥ चौपाई॥ कर सरंग बि
साथ धरि नाथा॥ नगपति ठवनि च
ले रघुनाथा॥ प्रथम कीन्ह प्रभु धनु
ष टंकोरा॥ रिपु दल बधिर भय
सुनि सोरा॥ सत्यसिंध छाडे सर ल

छ॥ अलसर्पजानुचलेसपछ॥ अ
तिजवचलेनिसाचरवरूथा॥ लागे
॥६३॥ करनचरविकटनिसाचा॥ कर
हिचरननासिरघुवरजंडा॥ घोरित
अवीरहोहिसतखंडा॥ धूर्मधूमिला
इलमहिपरही॥ उठैसनारिसुचर
पुनिलरही॥ लागतवानजलदनादि
मिमातहि॥ बहुतकदेखिकठिनसरना
जहि॥ रुंडप्रचंडमुंडविनुधावहि॥
धरुधरुमारुमारुधुनिगावहि॥ दो
हा॥ छिनमहप्रभुकेसायकनिकाटे
विकटपिसाच॥ पुनिरघुपतिकेतू
नमहप्रविसेसवैनराच॥ चौपई॥
कुंभकरनमनदीखविचारी॥ हते
निमखमेनिसचरनारी॥ भयउ
क्रोधदारुनवलवीरा॥ करिमृगना
यकनादगंभीरा॥ कोपिमहीधर
लेइउपारी॥ डारैजहामर्कटचरना ४३

री अवतसैलदेखिप्रभुजारे॥ सरनअ
रिरजसमकरिडारे॥ पुनिरघुवीरताकि
कोपिरघुनायक॥ छाडेअतिकराल
वहोसायक॥ तनमेप्रविसिनिसरिसोई
जाई॥ जनुदामिनिघनमाहिसमाई॥
सोनितस्रवतसोहितनकारे॥ जनुक
जलगिरगेरूपनारे॥ विकलविलो
किभालुकपिधाये॥ वहसाजवहीनि
करचरआये॥ दोहा॥ गर्जतधाएवेग
अतिकोटिकोटिगहकीस॥ महिपटके
गजराजइवसपथकरैदससीस॥
चौपई॥ भागेभालवलीमुखजूथा॥ वृकवि
लोकिजिमेखवरूथा॥ चलेभालकपिभागि
नेवानी॥ विकलपुकारहिआरतिवानी॥ ए
हैनिसचरदुकालसमअहई॥ कपिकुलदेस
परनअववहई॥ कृपावारिधरराममखरारी॥
पाहिपाहिप्रनतारतिहारी॥ सकरुनवचन
सुनतभगवाना॥ चलेसुधारिसरासरवाना॥
रामसैननिजपाछेघाली॥ चलेसकोपम

हा बलसाली॥ ऐंचि धनुसर सत संधाना
१४५ छूटे तीर सरीर समाने॥ लागत सर धाव
रिस भारा॥ कुधर डगमगत डोलति धरा॥ ली
न्ह एक तेहि सैल उपाटी॥ रघुकुल तिलक भु
जा सोई काटी॥ धावा बाम बाहु गिरि धारी॥
प्रभु सोउ भुजा काटि महि पारी॥ काटे भुजा
सोह खल कैसा॥ पंछहीन मंदिर गिर जैसा॥
उग्र बिलोकनि प्रभुहि बिलोका॥ ग्रसन च
हत मानहु त्रय लोका॥ दोहा॥ करि चिक्कार
अति घोर तब धावा बदन पसारि॥ गगन
सिध सुरा त्रसित सब हा हा हेत पुकारि॥ चौ
पई॥ सभय देव करुनानिधि जानेउ॥ श्रव
न प्रजंत सरासन तानेउ॥ बिसष निकर नि
स चर मुख भरेउ॥ तदपि महाबल भूमि न
परेउ॥ सरन भरा मुख सनमुख धावा॥ का
ल त्रोन सजीव जनु आवा॥ तब प्रभु कोपि
तिव्र सर लीन्हा॥ धर ते भिन्न तासु सिर
कीन्हा॥ सो सिर परेउ दसानन आगे॥ बि
कल भयउ जिमि फनि मनि त्यागे॥ धर
नि धसै धर धाव प्रचंड॥ तब प्रभु काटि कि

न्ह दुई खंडा॥ परेउ भूमि जिमि नभ ते भूधर॥ हे
ठ दावि कपि भालु निसाचर॥ तासु तेज प्रभु
बदन समाना॥ सुर मुनि सबहि अचंभव
माना॥ सुर दुंदुभी बजावहि हरषाही॥ ज
य जय करि प्रसून बरषाही॥ करि बिनती
सुर सकल सिधाये॥ तेही समय देवरिष
आये॥ गगनोपरि हरि गुन गन गाये॥ रु
चिर बीर रस प्रभु मन भाये॥ बेगि हतौ
खल मुनि कहि गयेउ॥ राम समर महि सो
भित भयउ॥ छंद॥ संग्राम भूमि बिरा
ज रघुपति अतुल बल कोसल धनी॥
श्रम बिंद मुख राजीव लोचन रुचिर त
न सोनित कनी॥ भुज जुगल फेरत स
र सरासन भालु कपि चहु दिसि बने॥
कहि दास तुलसी कहि न सकु छबि से
ष जे आनन घने॥ दोहा॥ निसचर अ
धम मलाकर ताहि दीन निज धा
म॥ गिरजा ते नर मंदमति जे न भजहि
श्रीराम॥ चौपई॥ दिन के अंत फिरी दो
उ अनी॥ समर मारि सुभटन्ह श्रम घ
भरि नी॥ राम कृपा कपि दल बल बाढ़ा॥ जिमि त

लं॰ का॰ नयाइ लागि अति हठा ॥ दीजहि निसच
रहि दिन अरु राती ॥ निज मुख कहे धर्म जेहि
॥८५॥ नाती ॥ वहो विभीषण दसकंधर अरही ॥ बंधु
सीस पुनि पुनि उर धरही ॥ रोवहि नारि
हृदय हति पानी ॥ तासु तेज बल विपुल
बषानी ॥ मेघनाद तेहि अवसर आवा
कहि वो होय कथा पितहि समझावा ॥ देष
हु आलि मोरि मनसाई ॥ अवहिं वहोत
अ करो बड़ाई ॥ इष्ट देव सो बल रथ
पायउं ॥ सो बल तात न तोहि दिषायउं
एहि विधि जल्पत भयउ बिहाना ॥
चहु द्वार कपि लागे नाना ॥ इत क
पि भालु काल सम बीरा ॥ उत रजनीच
र अति बल धीरा ॥ लरहिं सुभट निसि
जनि जय हेतू ॥ वरनि न जाय सम
र षग केतू ॥ दो॰ ॥ मेघनाद माया
रची रथ चढ़ि गयउ अकास ॥ गर्जेउ
प्रलय पयोधि जिमि भइ कपि कट
क त्रासा ॥ चौपाई ॥ सक्ति सूल तरवा
रि कृपाना ॥ अस्त्र सस्त्र कुलिसायुध ना ८५

ना ॥ डारे परसु परघ पषाना ॥ लागे वृष्
टि करै बहु बाना ॥ रहे दसो दिसि सायक
छाई ॥ मानहु मघा मेघ झरि लाई ॥ धरु धा
रु मारु सुनि ॥ नहिं कपि काना ॥ जो मारै तेहि
कोउ न जाना ॥ गहि गिरि तरु अकास कपि
धावहिं ॥ देषहिं तेहि न दुषित फिरि आव
हिं ॥ अवघट घाट बाट गिरि कंदरा ॥ मा
या बल कीन्हेसि सर पंजर ॥ जाहिं कहा
व्याकुल बंदर ॥ सुरपति बंदि परे
जनु मंदर ॥ मारुतसुत अंगद नल नी
ला ॥ कीन्हेसि विकल सकल बलसीला
पुनि लछिमन सुग्रीव विभीषन ॥ सर
न्हि मारि कीन्हेसि जर्जर तन ॥ पुनि रघु
पति सन जूझै लागा ॥ सर छाड़ै होइ
लागहिं नागा ॥ व्याल पास बस भ
ए षरारी ॥ स्वबस अनंत एक अविका
री ॥ नट इव कपट चरित कर नाना ॥ स
दा स्वतंत्र राम भगवाना ॥ रन सोभा ल
गि प्रभुहिं बधावा ॥ देषि दसा देवन्हि
भय पावा ॥ दो॰ ॥ षगपति जाकर ना
म जपि मुनि काटहि भव पास ॥ सो प्र

जुआवहिबंधतरब्यापकविस्वनिवा
स॥चौपाई॥चरितरामकेसगुनभवा
नी॥तर्किनजाइबुधिबलबानी॥अ
सबिचारिजेतग्यबिरागी॥रामहिभ
जहितर्कसबत्यागी॥ब्याकुलकटकु
कीनघननादा॥पुनिभाप्रगटकह
दुर्बादा॥जामवंतकहखलरहठाढ़ा॥
सुनिकरिताहिक्रोधअतिबाढ़ा॥बू
ढजानिजडछाड़ौतोही॥लागसि
पतितपचारैमोही॥असकहिती
व्रतसूलचलावा॥जामवंतकर
गहिसोईधावा॥मारसिमेघनाद
कैघाती॥पराभूमिघुर्मितसुरघा
ती॥पुनिरिसेहसगहिचरनफिरावा॥
महिपछारिनिजबलदिषरावा॥
बरप्रसादसोमरैनमारा॥तबगहि
पदलंकापरडारा॥इहांदेवरिषिगरु
डपठावा॥रामसमीपसपदिसोआ
वा॥[illegible]॥पन्नगारिषायेसकल॥ ६

छिनमहब्यालबरूथ॥भयेबिगतमा
या॥तुरतहरषेबानरजूथ॥दो॥गहिगिरि
पादपउपलनषधायेकीसरिसाय॥
चलेतमीचरबिकलतरगढ़परचढ़े
पराय॥चौपाई॥मेघनादकेमूर्छाजा
गी॥पितहिबिलोकिलाजअतिलागी॥
तुरतगयउगिरिबरकंदरा॥करौंअजे
मषअसमनधरा॥सोसुधिपाइबभीष
नकहई॥सुनिप्रभुसमाचारअसअ
हई॥मेघनादमषकरैअपावन॥षल
मायाविधिदेवसतावन॥जोप्रभुसि
धहोइजोपावहि॥नाथबेगपुनिजी
तिनजाइहि॥सुनिरघुपतिअतिसै
सुषमाना॥बोलेअंगदादिकपिनाना॥
लछिमनसंगजाहुसबभाई॥कर
हुविधंसजग्यकरजाई॥तुमलछिम
नमारेहुरनओही॥देषिसभयसुरदु
षअतिमोही॥मारेहुतेहिबलबुधि
उपाई॥जिहिछीजैनिसचरसुनि

भाई॥ जामवंत कपिराज बिभीषन॥
सैनसमेत रहे तीनौ जन॥ जब रघुबर
४७॥ दीन्ह अनुसासन॥ अरि निषंग असि
साजि सरासन॥ प्रभु प्रताप उर धरि
रनधीरा॥ बोले घन इव गिरा गंभीरा॥
जौ तेहि आजु बधे बिनु आऊं॥ तौ रघु
पति सेवक न कहाऊं॥ जौ सत संकर कर
हिं सहाई॥ तदपि हतौं रघुबीर दुहाई॥
दोहा॥ बंदि राम पद कमल जुग चलेउ
तुरंत अनंत॥ अंगद नील मयंद नल
संग सुभट हनुमंत॥ चौ० ३॥ जाइ
कपिन्ह दीख सो बैसा॥ आहुति देइ रु
धिर अरु भैंसा॥ तव श्री कै कीत जग्य
बिधंसा॥ जब न उठै तब करत प्रसंसा॥
तदपि न उठै धरेउ कच जाई॥ लातन्ह
हति हति चले पराई॥ लै त्रिसूल धावा
कपि भागे॥ आये जहां रामनुज आगे॥
आवा परम क्रोध करि मारा॥ गर्ज घो
र रव बारहि बारा॥ कोपि मारुतसुत अं ४७

राई॥ तुरत चलन्हि लगि भुज जहि पठाई॥
इहि बिधि लखे सकल भुज बाता॥ परे
भूमितल अति बिकलाता॥ बाचि सकल
भुज लिषत जथारथ॥ लछिमन राम
जानि परमारथ॥ तासु नाय तदपि व
है नाती॥ बिलपहि सब मिलि सखिन्ह कि
पाती॥ गुनगन साहस सील नाह के॥
कहि रोवहि बल बिजय बाहु के॥ जेहि भु
ज बल सुरनाथ बिगोये॥ सो प्रभु आ
ज समर महि सोये॥ मुनिगन भूषन ब
सन बिसारहि॥ महि लोटहि अरु तन सि
र मारहि॥ मगन बिपति सरीर सुधि ना
ही॥ सरन बिपति कहहि कहि पाही॥ छि
न क प्रबोध सखी कोउ करई॥ बहोरि सो
क दावानल जरई॥ छिन छिन उठति
परति धरनी तल॥ पुनि पुनि सुनि स
राहि पति के बल॥ दोहा॥ तिन्ह मैं सखी स
यान इक कहत समुझाई बैन॥ सोक छाडि

पतिदेवता सुमति सिरोमनि चौ
लंक॰ पई॥ सुनि अहसहना मात नुजाना॥
॥५५॥ सत्यकला नुमस बीसुमाता॥ विधिनि
रमत दुखमोक्ष कूलाहू॥ सुखपरियूर
ने खनेसव आहे॥ विजयराम लछि
मन अहआयेउ॥ सुजससकलमर
करलपाई॥ कलकलंअव डलहेउव
नीघन॥ केलेक घर असस नउनेहि
घन॥ छरी वंदि अवसुरगन खेरी॥
निजनिजपुर नद्दुहाई फेरी॥ मुनि
पुलस्त करनाकलनासु॥ अवरवि
सासिसुख अरहु प्रकासी॥ तेजवंतपा
वक्ष परहरि दुख॥ वहहि समीर आ
जु अपने सुख॥ सलिल गगन तल
निर्मल आजु॥ सुवसवसहि सुरना
यक राजू॥ दोहा॥ जम कुमेर दिसपाल
सव प्रमुदित सुरनर नाग॥ धाइ अ
धाइ विहरह दुख पाइ सुजस्य विनाग॥ ५५

न होई॥ जर वानर पुरषारथ देखत॥
वड़पर प्रवल घोर अरिलेखत॥ कूर
सिंधु लेका पतिजारी॥ जद्यु अरि मा
नत नाहि सुरारी॥ कुं नकरन अति
काय महोदर॥ मम पति गिरे उसमे
तसहोदर॥ जेरिपु चहहि दसानन
जीती॥ देषेउ महा मोह अररीती॥
उतरू देउ न व पाति कूले ई॥ अवि
वाद अवसर वस घोई॥ फिरेउ रा
जत व मोहि न आजू॥ विन पिय
सकल नर अक्षर साजू॥ दोहा॥ न
रतहि दुठिउ सुलोचना गई मयसु
ता पास॥ पदगहि रोवति सकल क
हि प्रगट सोक उपहास॥ चौपई॥
आदिहि तै सव कथा वखानी॥ सुनि
सुनि रोवहि रावन रानी॥ कही सोप
ति जुजली षावहोरी॥ रामलखन
महि मा नहि थोरी॥ कहेउ वहो दस
कंधर कोधा॥ मुएहि विकुंवित अनै 35

लं०कं॰ सोजोधा॥ सुनि सुपुत्र बधू की बानी॥ बोली
दुषित मंदोदरि रानी॥ कहहु सो मानि वस
॥५४॥ त्य सयानी॥ सुनि जो नारद मुष की बानी
पढि ली बात जाई सब साची॥ अनुज
बधी न्ह नसे श्री बाची॥ हे बिन होइ ब
घारि घ जाघत॥ अपने महामोह मन
माषित॥ आगि लि कथा सम्मा सस प्रे
ता॥ सुनि हि पुत्री रिष बरनी ठुजेता॥ बी
र जाब दस कंधर जूझहि॥ सीयें सो क
संकर ते दूरहि॥ बानर जाल राज म
हे लूरहि॥ सुर मानि जूषन बसन बिमा
ना॥ भोग करहि बन चर कुल नाना॥ दो
हा॥ राज बिभीषन पाइहैं अमर कलप
निरबाहि॥ जावी बस सुष दुष जगत
उपदेसि अस कहि जाहि॥ चौप॥ मुनि ब
चन कछु मोहि प्रतीती॥ अन जा बसहु
हारि अरु जीती॥ तुम पुत्री अब परहरि
सोका॥ पति संग तुरत साधि परलोका॥ ५४
जाहु राम पहि पति सिर लागी॥ तजि

कं॰क्रं चन॥ आवत सलिता राजी व दल लो
॥४० चन॥ देषा है कछ अघं रघुराई॥ नरग
ति जाग ति कृपाल दिषाई॥ सोरठा॥
प्रभु बिलाप सुनि श्रान॥ बिकल जत्थे
बानर निकर॥ आइ गये हनुमान
जिमि करुना मै बीर रस॥ चौपाई॥ रा
घि राम जो देह नुमाना॥ अंतक काल रूप प्र
नु परम सुजाना॥ तुरत बैद तब कीन्ह
उ पाई॥ उठि बैसे लछिमन हरषाई॥
हृदय लाइ जोरे दू प्रभु भ्राता॥ हरषे
सकल जाल कपि जाता॥ पुनि कपि बै
द तहा धरि आये॥ जेहि विधि तबहि ज
हा तें लाये॥ यह वृतांत दसानन सुने
उ॥ अति बिषाद पुनि पुनि सिर धुने
उ॥ व्याकुल कुंभकरन पहि गयेउ॥ क
रि बहु जतन जगावत भयेउ॥ जा
गा निसाचर देषि अ कैसा॥ मानहु का
ल देह धरि बैसा॥ कुंभकरन बूझा सु
नजाई॥ काहे तव मुष रहा सुषाई॥ क ४०
म
56

॥ बहुसि

सुतबित नारि भवन परिवारा। होहि जा
हि जग बारहि बारा॥ अस बिचारि जीयँ
जागिहु ताता॥ मिलै न जगत सहोदर
भ्राता॥ जथा पंख बिन खग अति दी
ना। मनि बिनु फनि करिबर करि ही
ना॥ अस मम जीयन बंधु बिन तो
ही॥ जौ जड़ दईउ जिआवै मोही॥ जै
हौं अवधि कवन मुख लाई॥ नारि हे
त प्रीय भाइ गवाई॥ बरु अपजस स
हतेउँ जग माही॥ नारि हानि विसेष
छति नाही॥ अब अपलोक सोक सुत
तोरा॥ सहिहि निठुर कठोर उ मोरा॥
निज जननी के एक कुमारा॥ तात
तासु तुम प्रान अधारा. सौपिसि मो
हि तुम हि गहि पानी॥ सब बिधि सुख
द परम हित जानी॥ उतर काह देहउँ ते
हि घर जाई॥ उठि किन मोहि सिखाव
उ भाई॥ बहु बिधि सोचत सोच बिमोच

॥दोहा॥ सुनु सुत सदगुन सकल तव हृदय ब
सहु हनुमंत॥ सानुकूल रघुबंस मनि रहहु
समेत अनंत॥ चौपाई॥ सोई अवजत न कु
हहु हनुमंता॥ देखिय न पन स्याम मृदु गात.
तब हनुमान राम पहि जाई॥ जनक सुता के
कुसल सुनाई॥ सुनि बानी पतंग कुल भू
षन॥ बोलि लीये जुबराज बिभीषन॥ मारु
तसुत के संग सिधावहु॥ सादर जनक सुता
ले आवहु॥ तुरत सकल गए जहँ सीता॥ सेव
हि सब निसिचरी बिनीता॥ बेगि बिभीषन
तिन्हहि सिखावा॥ सादर तिन्ह सीतहि अन्ह
वावा॥ दिव्य बसन भूषन पहिराए॥ सिबि
का रुचिर साजि लै आए॥ ता पर हरषि चढ़ी
बैदेही॥ सुमिरि राम सुख धाम सनेही॥ बे
॥दो॥ त्र छत्र चहु पासा॥ चले सकल मन
रन चरमा॥ देखन भालु कीस सब आए॥
गंधर्ब हर बेवा रन धाए॥ कह रघुबीर
म आगन रा। सीतहि सखा पयादेहु आ
... बिहँसि

कहा रघुवीर गोसाई॥ सुनि प्रभु वचन भालु क
पि हरषे॥ नभ ते सुर प्रसून बहु वरषे॥ सीता
प्रथम अनल महराखी॥ प्रगट कीन्ह चह अं
तर साखी॥ दोहा॥ तेहि कारन करुनायतन
कहे कछुक दुर्बाद॥ सुनत जातुधानी सब
लागी करन विषाद॥ चौपई॥ प्रभु के व
चन सीस धरि सीता॥ वोली मन क्रम वच
न पुनीता॥ लछिमन होहु धर्म के नेगी॥
पावक प्रगट करहु तुम वेगी॥ सुनि लछि
मन सीता कै वानी॥ विरह विवेक धर्म र
ति सानी॥ लोचन सजल जोरि कर दोउ॥
प्रभु तन कछु कहि सकत न ओऊ॥ देखि
मनु रुख लछिमन धाए॥ प्रगट करि सा दो
ठ वहु लाए॥ प्रवल अनल विलोकि वैदे
ही॥ हृदय हरष नहि [illegible] देह ते
मन वच क्रम मम उर माही॥ हे सिया
र आन गति नाही॥ तव [illegible] चत मोह वि १८
जाना॥ मो कह होउ श्रीख
श्रीखंड सम पावक

हि नाचा॥ धरनी मह धर भाव प्रचंडा॥ त
व प्रभु सर हति कृत जुग खंडा॥ गाजे दु
मरत घोर रव भारी॥ कहा राम रन हतौ
प्रचारी॥ डोली भूमि गिरत दसकंधर॥
छुभित सिंधु सरि दिग्गज भूधर॥ परेउ भु
मि दोउ खंड बढाई॥ चपे भालु मर्कट स
मुदाई॥ मंदोदरी आगे भुज सीसा॥ धर
सिर चले जहा जगदीसा॥ प्रविसे सव
निषंग मह आई॥ देखि सुरन्ह दुंदुभी
वजाई॥ तासु तेज समान प्रभु आनन
॥ हरषे देखि संभु चतुरानन॥ जय ज
य धुनि पूरे ब्रह्मंडा॥ जय रघुवीर प्रव
ल भुजदंडा॥ वरषहि सुमन देव मुनि
बृंदा॥ जय कृपाल जय जय सुखकंदा
॥ छंद॥ जय कृपाकंद मुकुंद द्वंद हरन स
रन सुखप्रद प्रभो॥ सुर सिद्ध मुनि
गंधर्व हरषे वाजे दुंदुभी गहगही॥ संग्रा
म आगन राम अंग अनंग वहु सोभा ४४

लंक ल्हीं॥ सिरजटामुकुटप्रसूनबिचबिच
अतिमनोहरराजहीं॥ जनुनीलगिरिपर
॥८४॥ तड़ितपटलसमेतउडुगनभ्राजहीं॥ भु
जदंडसरकोदंडफेरतरुधिरकनतन
अतिबनै॥ जनुरायमुनीतमालपर
बैठीबिपुलसुखआपनै॥ दो०॥ कृपा
दृष्टिकरिबृष्टिप्रभुअभयकियेसुर
बृंद॥ हरषेबानरभालुकपि जयसुख
धाममुकुंद॥ चौपई॥ पतिसिरदेखतमं
दोदरी॥ मुर्छितबिकलधरनिखसिपरी
॥ जुवतिबृंदरोवतिउठिधाईं॥ तेहिउठाइ
रावनपहंआईं॥ पतिगतिदेखितेकर
तपुकारा॥ छूटेकचनसरीरसंभारा॥
उरताड़नाकरहिबिधिनाना॥ रोव
तकरहिप्रतापबखाना॥ तुवबलना
थडोलनितधरनी॥ तेजहीनपावक
ससितरनी॥ सेषकमठसहिसकहि ८४
ना नभारा॥ सोइतनभूमिपरेउभरि

छारा॥ बरुनकुबेरसुरेससमीरा॥ रनसन
मुखधरिकाहुनधीरा॥ भुजबलजीतेहुका
लजमसाईं॥ आजुपरेहुअनाथकीनाईं॥
जगतबिदिततुम्हारिप्रभुताई॥ सुतपरिज
नबलबरनिनजाई॥ रामबिमुखअसहाल
तुम्हारा॥ रहानकोउकुलरोवनहारा॥ तव
बसबिधिप्रपंचसबनाथा॥ सभयदिसिपति
नितनावहिंमाथा॥ अबतवसिरभुजजं
बुकखाहीं॥ रामबिमुखयहअनुचितनाहीं
कालबिबसपतिकहानमाना॥ अगजग
नाथमनुजकरिजाना॥ छंद॥ जान्योम
नुजकरिदनुजकाननदहनपावकह
रिस्वयं॥ जेहिनमतसिवब्रह्मादिसुरपि
यभजहुनहिंकरुनामयं॥ आजन्मतें
परद्रोहरतपापौघमयतवतनुअयं॥
तिन्हहूंदियोनिजधामराममनामिब्र
ह्मनिरामयं॥ दोहा॥ अहहनाथरघुना
थसमकृपासिंधुनहिंआन॥ मुनिदुर्लभ

जेपरमगतितेहिदीन्हभगवान॥चौपाई॥
मंदोदरीवचनसुनिकाना॥सुरमुनिसिद्ध
सबनिसुखमाना॥अजमहेसनारदसन
कादी॥जेमुनिवरपरमारथवादी॥भरिलो
चनरघुपतिहिनिहारी॥प्रेममगनसब
भएसुखारी॥रुदनकरतविलोकिसब
नारी॥गएउविभीषनदुखमनभारी॥
बंधुदसादेखतदुखकीन्हा॥रामअनुज
कहुंआयसुदीन्हा॥लछिमनजाइता
हिसमुझाएउ॥बहुरिविभीषनप्रभु
पहंआएउ॥कृपादृष्टिप्रभुताहिविलो
का॥करहुक्रियापरिहरिसबसोका॥की
न्हक्रियाप्रभुआइसुपाई॥विधिवत
कालदेसजिमिगाई॥दोहा॥मयतन
यादिकनारिसबदेहितिलांजलिता
हि॥भवनगईरघुवीरगुनगनवरन
तमनमाहि॥चौपाई॥आइविभीषन ८५
पुनिसिरनावा॥कृपासिंधुजबआन

रथानकराला॥असगुनहोहिंआलतेहिना
ना॥रोवहिंबहुसृगालखरस्वाना॥बोले
खगजगआरतहेतू॥प्रगटभएजहंत
हंनभकेतू॥दसहुंदिसिदाहहोनअतिला
गा॥भएउपरवविनुरविउपरागा॥मंदो
दरीउरकंपितभारी॥प्रतिमास्रवहिं
नयनमगवारी॥छंद॥प्रतिमास्रव
हिंपविपातनभअतिवातबहडोलत
मही॥वरषहिंवलाहकरुधिरकच
रजअसुभअतिसककोकही॥उतपा
तअमितविलोकिनभसुरमुनिविकलबो
लहिंजयजये॥सुरसभयजानिकृ
पालरघुपतिचापसरजोरतभए॥
दोहा॥खैंचिसरासनश्रवनलगिछा
ड़ेसायकतीस॥रघुनायकसायक
चलेमानहुंकालफनीस॥चौपाई॥
सायकएकनाभिसरसोषा॥अपरल
गेसिरभुजकरिरोषा॥लैसिरबाहु ८६
चलेनाराचा॥सिरभुजहीनरुंडम 40

देरामरावनवधुलि रमहि मेंगीरे॥ श्री
रामरावनसमरचरित अनेककल्प
जेगावही॥ सतसेषसारदनिगमक
वितेपुतदपिपारनपावही॥ ॥ ॥ श्र
हैतामगुनगनकछुकजडमति तुलसी दा
स॥ निजपोरुषअनुसारतजिमिमसकउ
ड़हिआकास॥ ॥ ॥ सिरभुजसिरबाहुबहु
मरेनचरलंकेस॥ पुनुकीतमुनिसि
धसरवाकलरहविकलेस चोपइ॥ कार
नवहहिसीससमुदाई॥ जिमिप्रतिलाभ
लोभअधिकाई॥ मरेनरिपुस्रमभयउ
विसेष॥ रामबिभीषनतनतबदेखा
उमाकालमरजाहकीइछा॥ सोईप्रभु
करेजनप्रीतिपरिछा॥ सुनुसरवगयच
राचरनायक॥ प्रनतपालसुरमुनिसु
खदायक॥ नाभिकुंडसुधाबसजाके॥
नाथजिअतरावनबलताके॥ सुनत
बिभीषनबचनकृपाला॥ हरषिगहेकर

५५
कितअरिबीस॥ गर्जेउबहुरिदससीस॥
॥८२॥ लछिमनकपीसममेत॥ भयेबिकल
वीरअचेत॥ हारामहारघुनाथ॥ कहिस
नसमीजहिहाथ॥ एहिविधिसकल
बलतोरि॥ तेहिकीन्हकपटबहोरि॥ प्रग
टेसिबहुहनुमान॥ धरेगहैपाखान
॥ तिनरामघेरेजाइ॥ चहुदिसिबरूथ
बनाइ॥ मारहुधरहुजनिजाई॥ कटक
टहिपूछउठाइ॥ दहदिसिलगूरवि
राज॥ तेहिमध्यकोसलराज॥ छंद॥
तेहिमध्यकोसलराजसुंदरस्याम
तनसोभालही॥ जनुइंद्रधनुअ
नेककीबरवारितुरंगतमालही॥ प्र
भुदेखहरखविषादउरसुरवदतज
यजयजयकरी॥ रघुवीरएकहितीर
कोपैनिमिषमहमायाहरी॥ मा
याविगतकपिभालुहरषेविटप
गिरिगहिसवफिरे॥ सरनिकरछा
41

मर्कटविकटभालुकरालपरभूधरधर
अतिकोपिकरइप्रहारमारतभजिचले
रजनीचरा॥ बिचलाहतदलबलवंतकी
सनघेरिपुनिरावननलरे॥ बहदिसचढे
हन्हिमारिनखनबिदारितनब्याकुल
किये॥ दो॥ देषिमहामर्कटप्रबलरावं
नकीन्हविचार॥ अंतरहितहोइनिमि
षमहकृतमायाबिस्तार॥ छंद॥ तोमा
म॥ जवकीन्हतेइपाखंड॥ भयेप्रगटजंतुप्र
चंड॥ वेतालभूतपिसाच॥ करेंधरेधनुना
राच॥ जोगिनिगहेकरवाल॥ येकहाथम
नुजकपाल॥ करिसद्यसोनितपान॥
नाचहिंकरहिंबहुगान॥ धरुमारुबोल
हिंघोर॥ रहिपूरिधुनिचहुँओर॥ मुषबा
इधावहिंषान॥ तबलगेकीसपरान॥
जहजाहिंमर्कटभाजि॥ तहबरतदेष
हिंआगि॥ भयेबिकलबानरभालु॥
पुनिलागवरषनवालु॥ जहतहथ

सुं॰ ५॰ हिबहुतभातिसमुझाई॥ पुनित्रिजटानिज
भवनसिधाई॥ रामसुभाउसमुझिवैदेही
॥१८५॥ उपजीविरहविथाअतितेही॥ निसिहिस
सिहिनिंदतिवहभाती॥ जुगसमभईवि
हातनराती॥ करतविलापमनहिमन
भारी॥ रामविरहजानकीदुषारी॥ जव
अतिभयेउसीयदुरदाहू॥ फरकेउवा
मनयननुरवाहू॥ सगुनविचारिधरे
उमनधीरा॥ अवमिलिहहिंकृपाल
रघुवीरा॥ इहाअर्धनिसिरावनजागा
निजसारथीसनषीझनलागा॥ सठ
रनभूमिछडाएहमोही॥ धिगधिग
अधममंदमतितोही॥ तेइपदगहि
बहुविधिसमुझावा॥ भोरभयेरथच
ढिपुनिधावा॥ सुनिआगमदसानन
केरा॥ कपिदलषरभरपरेउघनेरा॥
जहतहभूधरविटपउपारी॥ धायेउ ५२
कटकटाइभटभारी॥ छं॥ धायेजो

नकहकटुवचनकहाए॥रघुपतिविरह
सविषसरनारी॥तकितकिमारवारव
हुमारी॥असेदुषजोरावममप्रान॥मो
इविधिताहिजिआवनआना॥वहुवि
धिकररसविलापजानुकी॥करिकरिसु
रतिक्रपानिधानकी॥कहत्रिजटासुन
राजकुमारी॥उरसरलागतमरैसुरारी॥
तातेउरप्रभुहतैनतेही॥एहकेहृदयव
सतिवैदेही॥दो०॥एहकेहृदयवसजा
नकीउरममवासहै॥ममउदरभुवन
अनेकलागतवानसवकौनासहै॥सुनि
वचनहरषविषादमनअतिदेषिपु
निविजटाकहा॥अवमरिहिरिपुएहि
विधिसंदेहीतजहिहियसंसयमहा॥
दो०॥कारतसिरहोहिहैविकलछूटि
जाइतुवध्यान॥तवरावनकेहृदयम
हमारिहहिरामसुजान॥चौपई॥असक

लं० कं० लोकहिवहौरिपरहतिचालपतिप्रभुपह
गए॥निसिजानिस्यंदनघालितेहितव
२० सूतजतनकरतचराए॥दो०॥ऊोमुछीत
वचालुकपिसवआएप्रभुपास॥सक
लनिसाचररावनहिघेरिरहेअतित्रा
स॥चौपई॥तेहीनिसिसीतापहेजाई॥
त्रिजटाकहिसवकथासुनाई॥सिरभु
जवाढिसुनतरिपुकेरी॥सीताउरभै
त्रासघनेरी॥मुषमलीनउपजीमन
चिंता॥त्रिजटासेवोलीतवसीता॥हो
हिकाहकहसिकहिमाता॥केहिविधि
मरहिविस्वदुषदाता॥रघुपतिसरसि
रकटैनमरई॥विधिविपरीतचरित
सवकरई॥मोरअभागजियावतयो
ही॥जेइहौहरिपदकमलविछोही॥
जेइकोतकपरकनकमृगझूठा॥अ
जहुंसोदइवमोहिपररूठा॥जेहिवि 43
धिमोहिदुषदुसहसहाए॥लछिम

तब नल नील सिर निचढि गऐ॥ नखन
लिलार विदारत भऐ॥ रुधिर विलोकि स
कोप सरीरा॥ तिन हि धरन कहँ भुजा प
सारी॥ गहि नहि जाहि करन पर फिरहीं॥
जनु जुग मधुप कमल वन चरहीं॥ कौ
पि कूदि दोऊ धरे सि वहोरी॥ महि पटक
त भजे भुजा मरोरी॥ पुनि सकोपि दस
धनु कर लीन्है॥ सरन्ह मारि घायल क
पि कीन्है॥ हनुमदादि मुछित करि वंद
र॥ पाइ प्रदोष हरष दसकंधर॥ मुर्छित दे
षि सकल कपि वीरा॥ जामवंत धाऐऊ
रनधीरा॥ संग भालु भूधर तरु धारी॥ मा
रन लागे पचारि पचारी॥ भऐऊ क्रुध राव
न वलवाना॥ गहि पद गहि पटकै भट ना
ना॥ देषि भालु कपि निज दल घाता॥ को
पि माझ उर मारसि लाता॥ ८८॥ उर ला
त घात प्रचंड लागत विकल रथ ते महि
परा॥ गहि भालु वीसहु कर मनहु कम
लनि वसे निसि मधुकरा॥ मुर्छित वि

रि कपि रावन हने महि परत पुनि उठि ल
रत देवन्ह जुगल कहँ जय जय भने॥
हनोमंत संकट देषि मर्कट भालु क्रोधा
तुर चले॥ रन मत्त रावन सकल सुभ
ट प्रचंड भुज वल दलमले॥ दोहा॥ राम
पचारे वीर तव धाऐ कीस प्रचंड॥ कपि
दल प्रवल विलोकि तेई कीन्ह प्रगट पा
षंड॥ चौपई॥ अंतरधान भऐऊ छन
ऐका॥ पुनि प्रगटे खल रूप अनेका॥ र
घुपति कटक भालु कपि जेते॥ जहँ त
हँ प्रगट दसानन तेते॥ देषि कपिन्ह
अमित दससीसा॥ भागे भालु विक
ल चर कीसा॥ चले वली मुष धरहि
न धीरा॥ त्राहि त्राहि लछिमन रघुवीरा॥
दस दिसि कोटिन्ह धावहि रावन॥ गर्ज
हि घोर कठोर भयावन॥ डरे सकल सु
र चले पराई॥ जीय कै आस तजहु अ 44
व भाई॥ सव सुर जीते ऐक दसकंधर॥ अव ६८
वहु भऐ तकहु गिरि कंदर॥ रहे विरंचि

सोपनितखवतपुनिसंजारिधाऐकुरिसिन्नरे
॥ होऊ निरेवल अतिमल्ल जुध विरुधऐ
कनिऐक हनै ॥ रघुवीर वल गर्वित विभी
षन घालि नहि ता कह गनै ॥ दोहा ॥ दुमा वि
भीषन रावनहि सनमुख चितव विश्राउ ॥
भरत सो काल समान अब श्रीरघुवीर प्र
भाउ ॥ चौपई ॥ देखा श्रमित विभीषन भा
री धाऐउ हनूमान गिरिधारी ॥ रथ तुरंग
सारथी निपाता ॥ हृदय माझ तेहि मारसि
लाता ॥ ठाढ रहा कंपित अति गाता ॥ गऐउ वि
भीषन जहं जन त्राता ॥ पुनि रावन तेहि
हतेउ प्रचारी ॥ चला गगन कपि पूंछ प
सारी ॥ गहेसि पूंछ कपि सहित उडाना ॥
पुनि फिरि भिरेउ प्रवल हनुमाना ॥ ल
रत अकास जुगल सम जोधा ॥ हनत
ऐक ऐकहि करि क्रोधा ॥ सोहहि नभ छ
ल वल वहु करही ॥ कज्जलगिरि सुमे
रु जिमि लरही ॥ वुधि वल निसिचर
परइ न पारा ॥ तव मारुत सुत प्रभु संभा
रा ॥ छंद ॥ संभारि श्रीरघुवीर धीर प्रचा

लं ३१ र पुनि धाइल ॥ हाहाकार भऐउ सुर नाके ॥
पल हजा हुस तमो रै आगे ॥ देखि विकल सु
७८॥ र अंगद धावा ॥ कुरि चरन गहि भुमि गि
रावा ॥ छंद ॥ गहि भुमि पारे लात मारे वालि
सुत प्रभु पह गऐ ॥ संभारि उठि दस कंध घो
र कठोर रव गर्जत भऐ ॥ करि चाप टापच
ढाइ दस संधानि सर वहु वरषई ॥ किऐ
सकल भट घायल भयाकुल देखि नि
ज वल हरषई ॥ दोहा ॥ तव रघुपति लंके
स के सीस भुजा दस चाप ॥ काटे भऐ व
होरि जिमि तीर्थ मूढ के पाप ॥ चौपई ॥ सि
र भुज वाढि देखि रिपु केरी ॥ भालु कपिन्ह
रिस भई घनेरी ॥ मरत न मूढ कटे भुज
सीसा ॥ धाऐ कोपि भालु भट कीसा ॥ वा
लितनय मारुत नल नीला ॥ दुविद क
पीस पवनवन सीला ॥ विटप महीध
र करहि प्रहारा ॥ सोई गिरि तरु गहि कपि 45
न्ह सो मारा ॥ ऐक नखन्हि रिपु वपुष विदा 65
री ॥ भागि चलहि ऐक लात न मारी ॥ 4

संभु बिग्यानी॥ जिन जिन प्रभु महिमा क
छु जानी॥ छंद॥ जाना प्रताप जे रहे निर्भय
कपिन रिपु जाने फुरे॥ चले बिचलि मर्क
ट भालु सकल कृपाल पाहि भयातु
रे॥ हनुमंत अंगद नील नल अतिबल ल
रत रन बाकुरे॥ मर्दहि दसानन कोटि को
टिन्ह कपट भू भट अंकुरे॥ दोहा॥ सुर बा
नर देखे बिकल हसे कोसलाधीस॥ स
जि सारंग एक सर हते सकल द
ससीस॥ चौपाई॥ प्रभु छन महु माया स
ब कारी॥ जिमि रबि उए जाहि तम फारी
॥ फिरे सुमन सब प्रभु पर बारे॥ रावन दे
खि एक सुर हरखे॥ भुज उठाइ रघुपति क
पि फेरे॥ फिरे एक एकन तब टेरे॥ प्रभु
बल पाइ भालु कपि धाए॥ तरल तमकि
संजुग महि आए॥ अस्तुत प्रसंसा सुरत दे
खे॥ भएउं एक मय इन्ह के लेखे॥ सठहु स
दा तुम मोर परायल॥ गहि असि कोप गग

च॥ छंद॥ कह राम अहि सिर निकर धारे दे
।श्री। लन भूर नाजि चले॥ संधानि धनु रघुबंस म
१०४॥ नि हसि सरनि सिर नदे नले॥ सिर मालि कु
ट गहि कालिका कर बृंद बृंदनि बहु मिली॥
करि रुधिर सर मज्जन मनहु संग्राम बट
पूजन चली॥ दोहा॥ पुनि रावन अति को
पकरि छाडि सक्ति प्रचंड॥ सन्मुख च
ली बिभीषनहि मनहु काल कर दंड॥ चौ
पाई॥ आवत देखि सक्ति घर धारा॥ प्रन
तारत हरि बिरुद संभारा॥ तुरत बिभीष
न पाछे मेला॥ सन्मुख राम सहे उ सो सेला
लागि सक्ति मुरछा कछु भई॥ प्रभु कृत खेल
सुरन बिकलई॥ देखि बिभीषन प्रभु श्रम
पाएउ॥ गहि कर गदा क्रोध करि धाएउ॥ रे कु
भाग्य सठ मंद कुबुधे॥ तै सुर नर मुनि नाग
बिरुधे॥ सादर सिव कहु सीस चढाए॥ एक
एक के कोटिन्ह पाए॥ तेहि कारन खल अब
लगि बाचा॥ अब तव काल सीस पर नाचा
॥ राम बिमुख सठ चाहस संपदा॥ अस कहि ह 46
नेसि माझ उर गदा॥ छंद॥ उर माझ गदा प्र 99
हार घोर कठोर लागत महि परे॥ दस बदन 4

न कपावही॥ हे कूसर सिर निकर छेदे नभ
उड़त इमि सोहही॥ जनु क्रोधि दिनय
कर निकर जह तह बिधुंतुद पोहही॥
॥दोहा॥ जिमि जिमि प्रभु हर तासु सिर
तिमि तिमि होहि अपारा॥ सेवत बिष
य बिबृधि जिमि नित नित नूतन मार
चौपई॥ दसमुख देखि सिरन कै बाढी॥
बिसरा मरन भई रिस गाढी॥ गर्जेउ
मूढ महा अभिमानी॥ धाएउ दसो सरा
सन तानी॥ समर भूमि दसकंधर को
प्यो॥ बरषि बान रघुपति रथ तोप्यौ॥
दंड एक रथ देखि न पारा॥ जनु निहार म
हि दिनकर दुरा॥ हाहाकार सुरन्ह तब की
न्हा॥ तब प्रभु कोपि कारमुक लीन्हा॥
सर निवारि रिपु के सिर काटे॥ ते दिसि बि
दिसि गगन महि पाटे॥ काटे सिर नभ मा
रग धावहि॥ जय जय धुनि करि भय
उपजावहि॥ कह लछिमन हनूमान क
पीसा॥ कह रघुवीर कोसलाधीसा॥

श्री॥ न निहफल लेइ सुधम सव ताके॥ जिमि पर
४॥ द्रोह निरत मनसा के॥ तब रावन दस सू
ल चलाए॥ बाजि चारि महि मारि गिराए
तुरग उठाइ कोपि रघुनायक॥ खैंचि सरा
सन छाड़े सायक॥ रावन सिर सरोज
बनचारी॥ चलि रघुबीर सिलीमुख
धारी॥ दस दस बान भाल दस मारे॥ नि
सरि गए चले रुधिर पनारे॥ स्रवत
रुधिर धाएउ बलवाना॥ प्रभु पुनि ध
नु कृत सर संधाना॥ तीस तीर रघुबी
र पवारे॥ भुजन समेत सीस महि पारे
काटत ही पुनि भए नवीने॥ राम बहो
रि भुजा सर छीने॥ काटत झटित पुनि
नूतन भए॥ प्रभु बहु बार बाहु सिर ह
ए॥ पुनि पुनि प्रभु काटत भुज सीसा॥
अति कौतुकी कोसलाधीसा॥ रहे छा
इ नभ सिर अरु बाहू॥ मानहु अमित
केतु अरु राहू॥ छं॥ जनु राहु केतु अने 47
क नभ पथ श्रवत सोनित धावही॥ ६८
रघुबीर तीर प्रचंड लागहि भूमि गिर 4

कोटिन्ह चक्र त्रिसूल पवारे॥ विनु प्रया
स प्रभु काटि निवारे॥ निहफल होइ राव
न सर कैसे॥ षल के सकल मनोरथ
जैसे॥ तव सत वान सारथी मारसि॥
परेउ भूमि जय राम पुकारसि॥ राम कृ
पा करि सूत उठावा॥ तव प्रभु परम क्रो
ध कहु पावा॥ छं॥ भए क्रुध जुध वि
रुध रघुपति त्रोन सायक कसमसे॥ को
दंड धुनि अति चंड सुनि मनुजाद सव
मारुत ग्रसे॥ मंदोदरी उर कंप कंपि
त कमठ भू भूधर त्रसे॥ चिक्करहि दि
गज दसन गहि महि देषि कौतुक सुर हसे
॥ दोहा॥ तानि सरासन श्रवन लगि छा
डि विसिष कराल॥ राम वान इहि वि
धि चले लहलहात जनु व्याल॥ चौ
पई॥ चले वान सपक्ष जिमि उरगा॥ प्र
थमहि हतेउ सारथी तुरगा॥ रथ विभंजि
हति केतु पताका॥ गर्जा अति अंतर व
ल थाका॥ तुरत आनि रथ चढि षिसि
आना॥ छाडेसि अस्त्र सस्त्र विधि नाना॥

भूत पिसाच वधू नभ नाचहि॥ भट कपाल करता
३ ल वजावहि॥ चामुंडा नाना विधि गावहि॥ जंवु
४ क निकर कटक्कट कट्टहि॥ षाहि हुआहि अ
घाहि दपट्टहि॥ कोटिन्ह रुंड मुंड विनु डोल्लहि
सीस परे महि जय जय वोल्लहि॥ छं॥ वोल्ल
हि जे जय जय रुंड मुंड प्रचंड सिर विनु धा
वही॥ षप्परन्हि षग्ग अलूझि जूझहि सुभट सु
रपुर पावही॥ निसिचर वरूथ निमर्दि गर्जहि
भालु कपि दरपित भए॥ संग्राम आंगन सुभ
ट सोवहि राम सर निकरनि हए॥ दो
हा॥ हृदय विचारेउ दसवदन भा निसिचर सं
घार॥ मैं अकेल कपि भालु वहु माया करौ
अपार॥ चौपई॥ देवन्ह प्रभुहि पयादे देषा॥
उपजा उर अति छोभ विसेषा॥ सुरपति नि
ज रथ तुरत पठावा॥ हरष सहित मातलि लै 48
आवा॥ तेज पुंज रथ दिव्य अनूपा॥ हर्षि
चढे कोसलपुर भूपा॥ चंचल तुरग म
नोहर चारी॥ अजर अमर मन सम गति का
री॥ रथारूढ रघुनाथहि देषी॥ धाए कपि
वल पाइ विसेषी॥ सही न जाइ कपिन्ह कै
मारी॥ तव रावन माया विस्तारी॥ सो 57

नबानबीरचिक्करही॥घुर्मिघुर्मिघाइलम
हिपरही॥स्रवहिसैलजिमिनिझरझारी॥सो
नितसरिकादरभयकारी॥छंद॥कादरभयं
कररुधिरसरिताचलिपरमअपावनी॥दोउकू
लदलरथरेतचक्रअवर्तबहतिभयावनी॥
जलजंतुगजपदचरतुरंगखरबिबिधिब
हनकोगनै॥सरसक्तितोमरसर्पचापत
रंगचर्मकमठघनै॥कहदासतुलसीसक
नसोबहिसमजोहिआननघनै॥दोहा॥बीर
परहिजनुतीरतरुमज्जाबहुबहफेन॥का
दरदेखतअतिडरहिसुभटनकेमनचेन
॥चौपई॥मज्जहिभूतपिसाचबेताला॥प्र
थममहाझोटिंगकराला॥काककंकलेभु
जाउडाही॥एकतेछीनएकलेखाही॥एक
कहतऐसेवेनअघाई॥सठहुतुम्हारदरिद्रनजा
ई॥कहरतभटघायलतटगिरे॥जहतहम
नहुअर्धजलपरे॥खेचहिआतगीधतटभा
ए॥जनुबनसीखेलहिचितदऐ॥बहुभटबहे
चढेखगजाही॥जनुनीनारिखेलहिसरिमा
झ॥जोगिनिभरिभरिखप्परसंचहि॥भूप

नअभिरामा॥कटतटपरिकरकस्योनिषि
गा॥करकोदंडकठिनसारंगा॥छं॥
सारंगकरसुंदरनिषंगसिलीमुखाकरकटिक
स्यो॥भुजदंडपीनमनोहरायतउरधरासुर
पदलस्यो॥कहदासतुलसीजबहिप्रभुसर
चापकरफेरनलगे॥ब्रह्मंडदिगगजकमठ
अहिमहिसिंधुभूधरडगमगे॥दोहा॥हरषेदे
वबिलोकिछबिबरषहिसुमनअपार॥जय
जयप्रभुगनग्यानबलधामहरनमहिभा
र॥चौपई॥ऐहीबीचनिसाचरअनी॥कस
मसातिआईअतिघनी॥देखिचलेसन्मुख
कपिभटा॥प्रलयकालकेजनुघनघटा॥
बहुकृपानतरवारिचमकहि॥जनुदहु
दिसिदामिनीदमकहि॥गजरथतुरंग
चिकारकठोरा॥गर्जतमनहुबलाहकघो 49
रा॥कपिलंगूरबिपुलनभछाऐ॥मनहु
इंद्रधनुउऐसोहाऐ॥उठीधूरिमानहुज
लधारा॥बानबुंदहोइबृष्टिअपारा॥दुहु
दिसिपर्वतकरहिप्रहारा॥बज्रपातजनु
बारहिबारा॥रघुपतिबानकोपझरिला
ई॥घाइलभऐनिसिचरसमुदाई॥लाग 57

जेसनारिविकलकरिवाहिरतेअतिदीनपुकार
ही॥तवउठिउन्हकोपिकृतांतसमगहिचरन
वानरडारही॥ऐहिवीचकपिविधंसिमष
अतिदेषिमनमहहारही॥दोहा॥मषविधं
सिकपिकुसलसवआएरघुपतिपास॥च
लेउलंकपतिकृचहोइत्यागीजीवनआ
स॥चौपई॥चलतहोहिअतिअसुभभयं
कर॥वैठहिगीधउडिसिरउपर॥भएउ
कालवसकाहुनमाना॥कहैसिवजावहु
जुथनिसाना॥चलीतमीचरअनीअपा
रा॥वहुगजरथपदातिअसवारा॥प्रभुके
सन्मुषधाएउकैसे॥सलभसमूहअन
लकहजैसे॥इहांदेवतन्हविनतीकीन्ही॥
दारुनविपतिहमहिएहिदीन्ही॥अवज
निरामषिलावहुमोही॥अतिसेदुषि
तहोतवैदेही॥देववचनसुनिप्रभुमु
सकाना॥उठिरघुवीरसुधारेवाना॥ज
टाजूटदृढवांधामाथे॥सोहहिसुमन
वीचवीचगाथे॥अरुननयनवा
रदतनस्यामा॥अषिललोकलोच

लंका वधोहि॥सारथिहितूसरघालिरथतें
देतुरतलंकालैगयो॥रघुवीरवंधुप्रता
पपुंजवहोरिप्रभुचरननिनाए॥दोहा॥
७२॥ उहांदसाननजागिकरिकरैलागकछु
जाग॥जयचाहतरघुपतिविमुषस
ठहठवसअतिअग्यान॥चौपई॥इहांवि
भीषनसवसुधिपाई॥सपदिजाइरघु
पतिहिसुनाई॥नाथकरेरावनएकजा
ग॥सिधभएनहिमरिहिअभागा॥
पठवहुदेववेगिवरवंदर॥करहिवि
धंसआवदसकंधर॥प्रातहोतप्रभु
सुभटपठाए॥हनुमदादिअंगदसवधा
ए॥कौतुककूदिचढेकपिलंका॥पैठेराव
नभवनअसंका॥जवहीजगकरत 50
सोदेषा॥सकलकपिन्हभाक्रोधविसे
षा॥रननतेनिलजभाजिगृहआवा॥इ
हांआइवकध्याननलगावा॥असकहि
अंगदमारेउलाता॥चितवनसठस्वा
मनराता॥छंद॥नहिचितवजवकरि
कोपतवगहिदसनलातनमारही॥ 57

ऽगवन विराजजाके। असिरजिमिरजअ
नी॥ नरचहूँराजवनमूढरावनजानन
हिंचिनुअनेधनी॥ दोहा॥ देखतधाएपव
नसुतबोलतवचनकठोर॥ आवतनेहि
उरमहरतेउमुस्टप्रहारअतिघोर॥ चौ
पइ॥ जानुटाकिकपिभूमिनगीरा॥ उठा
सभारिबहुतरिसभीरा॥ मुठिकाएकताहि
कपिमारा॥ परेउसैलजिमिवज्रप्रहारा॥
गैमुर्छावहोरिसोइजागा॥ कपिवलवि
पुलसराहनलागा॥ धृगधृगममपौरु
षधृगमोही॥ जौतुंजीअतउठेसिसुरद्रो
ही॥ असकहिकपिलछिमनकहंआए॥
देखिदसाननविसमैपाए॥ कहरघुवीरस
मुझिजीअभ्राता॥ तुमकृतांतभछक
सुरत्राता॥ सुनतवचनउठिवैठिकृपा
ला॥ गइगगनसोसकतिकराला॥ धरिस
चापचलतसोनरेऊ॥ रिपुसमीपअ
तिआतुरगएऊ॥ छंद॥ आतुरवहोरिविभं
जिस्पंदनसूतहतिव्याकुलकिए॥ गिरे
धरनिदसकंधरविकलतरवानसत

लं क

गगनदिसिविदिसिअरुकपिन्हजही॥ न्हरेअ
तिकुलाहलभाविकलदलकपिभालुबोलहि
आतुरे॥ रघुवीरकरुनासिंधुआरतवंधुजन
५१॥ रछकहरे॥ दोहा॥ विचलतदेखिअनीकनि
जकटिकसिधनुहाथ॥ लछिमनचले
सरोषतबनाइरामपदमाथ॥ चौपइ॥
रेखलकामारसिकपिभालू॥ मोहिविलो
कितोरहेआलू॥ खोजतरहेउंतोहिसुतघा
ती॥ आजुनिपातिजुड़ावौंछाती॥ असक
हिछाड़ेसिवानप्रचंडा॥ लछिमनकिए
सकलसतखंडा॥ कोटिनआयुधरावन
डारे॥ तिलप्रमानकरिकाटिनिवारे॥ पु
निनिजवाननकीन्हप्रहारा॥ स्पंदनभं
जिसारथीमारा॥ सतसतसरमारिदस
भाला॥ गिरिशृंगन्हजनुप्रविसहिव्या 51
ला॥ सतसरपुनिमाराउरमाहीं॥ परेउ
अवनितलसुधिकछुनाहीं॥ उठाप्रव
लपुनिमुर्छाजागी॥ छाड़िसिवह्मदीन्
जोसांगी॥ छंद॥ सोव्रह्मदत्तप्रचंडसो
अनंतउरलागीसही॥ परौवीरविकल
वउसमुखअतुलवलमहिमारही॥ व

चलकरहि जेहि छल कीजहीं॥ धरि गाल फा
रहिं उर विदारहिं गर अंता वरि मेलहीं॥ प्रहला
द पति जनु विविध तनु धरि समर अंगन खेल
हीं॥ धरु मारु काटु पछारु घोर गिरा गगन म
हि भरि रही॥ जय राम जो त्रिन ते कुलिस कर
कुलिस ते त्रिन कर सही॥ दो०॥ निज दल वि
कल विलोकि तेइ बीस भुजा दस चाप॥ चले
दसानन कोपि तव फिरहु फिरहु करि दाप॥
चौपई॥ धाए परम क्रुध दसकंधर॥ सन्मुख
चले हूह दै बंदर॥ गहि पद पादप उपल प्रहारा
डारहिं ता पर एकहि बारा॥ लागहिं वज्र सैल त
न तासू॥ खंड खंड होइ फूटहिं आसू॥ चला न
अचल महारथ रोपी॥ रन दुर्मद रावन अ
ति कोपी॥ इत उत दपटि झपटि कपि जोधा
मर्दइ लागे भयउ अति क्रोधा॥ चले परा
इ भालु कपि नाना॥ त्राहि त्राहि अंगद
हनूमाना॥ पाहि पाहि रघुबीर गुसाईं॥
यह खल खाइ काल की नाईं॥ तेहि देखे कपि
सकल पराने॥ दसहु चाप सायक संधा
ने॥ छंद॥ संधानि धनु सर निकर छाड़ेसि
उरग जिमि उड़ि लागहीं॥ रहे पूरि सर धरनी

लं०
विभीषन प्रभु वचन हरषि गहे पद कंज॥
एहि मिसि मोहि उपदेसेहु राम कृपा सुख पुं
ज॥ २१॥ उत पचार दसकंठ भट इत अंगद ह
७० नुमान॥ लरत निसाचर भालु कपि करि
निज निज प्रभु आन॥ चौपई॥ सुर ब्रह्मादि
सिध मुनि नाना॥ देखत रन नभ चढ़े वि
माना॥ हमहूं उमा रहे तेहि संगा॥ देखत राम
चरित रन रंगा॥ सुभट समर रस दुहुं दिसि
माते॥ कपि जय सील राम बल ताते॥ एक ए
क सन भिरहिं पचारहिं॥ एकन्ह एक मर्दि म
हि पारहिं॥ मारहिं काटहिं धरहिं पछारहिं॥
सीस तोरि सीसन्ह सन मारहिं॥ उदर बिदार
हिं भुजा उपारहिं॥ गहि पद अवनि पटकि भट
डारहिं॥ निसिचर भट महि गाड़हिं भा
लु॥ ऊपर ढारि देहिं बहु बालू॥ बीर बलीमु 52
ख जुध बिरुधे॥ देखि अत बिपुल काल ज
नु क्रुद्धे॥ छंद॥ क्रुद्धे कृतांत समान कपि
तन स्रवत स्रोनित राजहीं॥ मर्दहिं नि
सिचर कटक भट बलवंत घन जिमि गा
जहीं॥ मारहिं चपेटन्हि डाटि दातन्हि काटि ला
तन्हि मीजहीं॥ चिक्करहिं मर्कट भालु छल 57

जनिजजोरीजानि॥ निरेवीरइतरघुपति
हिउतरावननहिवमानि॥ चौपई॥ रावनु
रथीविरथरघुवीरा॥ देषिविभीषनभए
उअधीरा॥ अधिकप्रीतिमनभासंदेहा
वंदिचरनकहकृपासनेहा॥ नाथनरथ
नहितनपदत्राना॥ केहिविधिजीतववी
रबलवाना॥ सुनहुसषाकहकृपानि
धाना॥ जेहिजयहोइसोस्यंदनआना
सौरजधीरजतेहिरथचाका॥ सत्यसील
दृढध्वजापताका॥ बलबिवेकदमपरहि
तघोरे॥ छमाकृपासमतारजुजोरे॥ ईस
भजनसारथीसुजाना॥ बिरतिचर्मसंतो
षकृपाना॥ दानपरसुबुधिसक्तिप्रचंडा
वरविग्यानकठिनकोदंडा॥ अमलअच
लमनत्रोनसमाना॥ समजमनियमसि
लीमुषनाना॥ कवचअभेदविप्रगुरपूजा
येहिसमविजयउपाइनदूजा॥ सषाध
र्ममयअसरथजाके॥ जीतनकहनकतहु
रिपुताके॥ दोहा॥ महाअजयसंसाररिपुजी
ति॥ सकैसोवीर॥ [illegible] जाकेअसरथहो
इ॥ दृढसुनहुसषामतिधीर॥ सोरठा॥ सुनत

लं० ६६

विधिजातिबाहनरथनाना॥ विपुलवरन
पताकध्वजनाना॥ चलेमतगजजूथघनेरे॥
प्रविटजलदमारुतजनुप्रेरे॥ वरनवरनविरुदै
तनिकाया॥ समरसूरजानहिबहुमाया॥ अ
तिविचित्रवाहनीविराजी॥ वीरबसंतसैन
जनुसाजी॥ चलतकटकदिगसिंधुरडगहीं॥
छुभितपयोधिकुधरडगमगहीं॥ उठीरेनु
रविगएउछपाई॥ पवनथकितवसुधाअ
कुलाई॥ पनवनिसानघोररववाजहि
महाप्रलयकेजनुघनगाजहिं॥ भेरिनफी
रीवाजसहनाई॥ मारूरागसुभटसुषदाई
केहरिनादवीरसबकरहीं॥ निजनिजबल
पौरुषउरधरहीं॥ कहैदसाननवीरसुभटा
मर्दहुभालुकपिनकेठटा॥ होमारिहोंभूपदो
उभाई॥ असकहिसनमुषफोजरिगाई॥ यह
सुधिसकलकपिनजवपाई॥ धाएकरिरघु 53
वीरदुहाई॥ छंद॥ धाएविसालकरालमर्क
टभालुकालसमानते॥ मानहुसपछउड़ाहि
भूधरवृंदनानावानते॥ नषसैलद्रुम
लादुमायुधसबलसंकनमानहीं॥ ज
रामरावनमत्तगजमृगराजसुजसब
नहीं॥ दोहा॥ दुहुदिसजयजयकारक 57

पुनि पुनि सिर धुनई ॥ दोहा ॥ मय तनया तव आ
इकै बहु प्रकार समुझाव ॥ मानु न मूढ़ काल बस
परम क्रुध्य कहे पाव ॥ चौपई ॥ रावन अवरै पुरख
ध बसई ॥ प्रेरित सो कौ विधि जो रचई ॥ इति श्री
रामायणे अहिरावन चरित्र ॥ चौपई ॥ निस
सि रात निकट नुनसार ॥ लागे चाल चपिचारि दुआ
रा ॥ सुभर बोलाइ दसानन बोला ॥ रन मन मुख ज
कर मन कोला ॥ सो अब ही बरु जाइ पराई ॥ संजुग
विमुख कटेन च लाई ॥ निज भुज बल मै बैर बढ़ा
वा ॥ देहौ उतर जौ रिपु चढ़ि आवा ॥ अस कहि मरु
त वेग रथु साजा ॥ बाजे सकल जुझाउ बाजा ॥
चले बीर सब अतुलित बली ॥ जनु कज्जल की
आंधी चली ॥ असगुन अमित होहि तेहि काल
गनै न भुज बल गर्व विसाल ॥ छंद ॥ अति गर्व
गनै न सगुन असगुन स्रवहि आयुध हाथ ते ॥
भट गिरत रथ ते बाजि गज चिक्करहि भाजहि सा
थ ते ॥ गोमाय गीध कराल खर रव स्वान रोवहि अ
ति घने ॥ जनु काल दूत उलूक बोलहि वचन
परम भयावने ॥ दोहा ॥ ताहि कि संपति सगुन सु
भ सपनेहु मन विश्राम ॥ भूत द्रोह रत मोह बस
राम विमुख रति काम ॥ चौपई ॥ चले निसाचर
कटक अपारा ॥ चतुरंगिनी अनी बहु धारा ॥ बि

बचन ये हेरि होइ चाहि ॥ मिले आइ कपीस चरन ध
रि माथा ॥ पुनि पद धरेउ निसाचर नाथा ॥ दो
हा ॥ जामवंत अंगद सहित मिले नील अरु की
स ॥ सनमाने प्रिय वचन कहि लषन कोस
लाधीस ॥ चौपई ॥ बहुरि सबनि मैरे हनुमा
ना ॥ कहहि तात तुम राषे प्राना ॥ देवन्ह सुम
न वर्षित हरषी न्हौ ॥ प्रमुदित हृदय दुंदुभी दीन्ही
अनुज सहित हरषे रघुबीरा ॥ बोले वचन सुनु
तनय समीरा ॥ तोहि समान नहि कोउ हित क्रा
री ॥ सुर मुनि सिध जो कोउ तनधारी ॥ जस तु
म्हार रघुवन मेह चयउ ॥ सुनि अस वचन
चरन कपि गहेउ ॥ नाथ करहु तुम मोहि अहि
लेखै ॥ तुम्ह नीच लै आम जल पेखै ॥ तैसे तुव
प्रताप बल नाथा ॥ सुनि अस कपिहि मिले र
घुनाथा ॥ कटक सहित हरषे होइ न जाई ॥ तेहि
अवसर सुष कहि किमि जाई ॥ उहा दसानन 54
सब सुधि पाई ॥ दूतन्ह कहा षबरि अस जाई ॥
अहिरावन कर मरन सुनि काना ॥ नरेउ तु
हत अति अकुलाना ॥ वचन बान सम ल
उ नाही ॥ संभ्रम मृदित परेउ महि माही ॥
सुधाइ लोचन जल वहई ॥ वचन न आसु 57

हतनलगेनिसिचरसमुदाई॥ वकगदकाईली
न्हहनूमाना॥करनलगेउरसिरभुजजाना
काहहिकानताकविनुकीन्हा॥धरियदकारि
अनलमहदीन्हा॥निजलगूरकेवेढवना
वा॥जिहितेकोउजानजैनहिपावा॥एहिवि
धिसवनिसचरसंघारे॥अहिरावनतवव
चनउचारे॥एकपिढीठत्रासनहितोही अ
हिरावनमैजानुनमोही॥जंवुमालवहजि
मितुममारा॥असवारतसुतहतेउविचारा
॥दोहा॥कालनेमसममैनहीसुनहिवचन
हनुमान॥असकहिघकगपलरेसिकपित
नवज्रसमान॥चौपई॥लैकसिताहिपवन
सुतमारा सीसकाटिअनलमहडारा पूनहु
तिकरितहसोसीसा प्रभुकहलेइचलेतह
कीसा मकरधुजतवविनतीकीन्हा वंध
नछोरिराजतेहिदीन्हा इहकहराजअर
हुतमताता सोपेहुप्रभुमहदूनोभ्राता
असकहिकपिनिजदलमहआवा हरषेकर
परमसुखपावा सतकसरीरप्रानफिरि
आवै गइमनिदुखनिकमनहुंफिरिपावे
गधुरनमिलियवहुरिजिमिआई इमिस

पतिचितवहिराममहरामनिरखिअहिरा
ज॥प्रभुकरकौतुककहिअहिमिसुनहुगरुड
खगराज॥चौपई॥पुनिहोउवंधुमनकी
न्हविचारा॥जपैसकलजगनामहमा
रा॥ एहिअवसरकहरहहनूमाना॥निकु
रनेआवबीरवलवाना॥यहविचारिकै
सुमिरनधरही॥सोपरिहोइजोविधिक
करही॥हसीसवनतवमारनलाहू॥घ
नसमानकपिगाजिनलाहू॥आ॥नि
सिचरसकलत्रसितभयेभारी॥कहहि
वचननिजहृदयविचारी॥अहिरावन
चलकीन्हनकाहू॥आवेउइहामनुज
सुरराहू॥तेहिदेवीकेधुमैआजू॥अव
नासवकरपरमअकाजू॥चरेतेजह 55
तिनिसिचरभारी॥दुसरेकपिगजेउअ
तिभारी॥दोहा॥प्रगटेरूपपवनसुतअ
हुलसगंभीर॥अतिचैचासितनिसाचर
सुनहुउमामतिधीर॥चौपई॥इमाममी
सवइमिअभिमानी॥मारुतवउजितिअ
यरपानी॥तेहिछनकपिलीन्हहेउसु 57

पिषेलारतप्रभुअनुसारा॥न्ना चह निसिच
रकुलसंघारा॥अहिरावनसुषन्नाकूरअैसे
चटैक्रोधलेइवलिपसुजैसे॥सवन्हहे
मतिघजवजाना॥लछिमनरामतुरत
तहाआना॥छाटश्रीन्हतहप्रभुकहआनी
निसिचरगहेहुआयुधपानी॥गहेगह
ओर्हअस्त्रधनुवाना॥सक्तिसूलतरवारि
कमाना॥दोह॥तोमरमुदगरफरसुअति
पासफासअरुवेत॥कैइनधकगधनुव
सरदेषतरहैनचेत॥चौपइ॥मयावलतै
सकलविचछन॥अतिविक्रालसोइजम
लछन॥हैविधिसकलवीरतहारहही॥अ
हिरावनअगपाअनसरही॥आयसुपाइअसि
तिछनआटे॥मारनकहप्रभुपरचैठाटे॥अै
इकहराजनीतिअनुसरहू॥तीभिरइविलं
वुअवकरहू॥सुनिअसमूटलागइभिवृह
ै॥सुमिरुजोतोरेकहकोउअहई॥नाहितो
कुलपहुचाआई॥निसिसपनासमहतुइदु
नेइ॥कहहिमूटप्रभुकहवहुवानी॥कह
अजकुचमोहिअतिहितवानी॥दोह॥फनि

देकहिएकसकैनहिपारी॥मारुतसुतसुतव
लहीटूचारी॥सुतक्निपूंछिसोवाधिनवा
नी॥चलेवहरिविलंवुवकिजानी॥धरिल
घुरूपलेमगैदेषा॥जीवसजीवपरहिनहि
लेषा॥देवीकरतहमंदपरहइ॥औनित
धरवहुकोकहिसकई॥विविधिजातिके
वापकवाना॥धरेआनदेवीअस्थाना॥
मालिनितलापूललेआई॥सुमनसकेमध्य
प्रविसेकपिजाई॥सुमनहतेअतिकलते
लुआई॥सोलैसुमनमंदपहिआई॥सुमन
सकलदेवीपरचटेहू॥विकटरूपतवक्र
पितहाचनेहु॥दोह॥छुवतचरनदेवी
तवधरनीगइसमाइ॥वदनपसारिठाटे
नरकपिद्दविवरनिनजाइ॥चौपइ॥ 56
रूपदेषिनाआनदनारी॥करहिविचार
निसाचरझारी॥करतहिक्रिदेविपूगटने
आजू॥वडभागीनानिसिचरराजू॥वहु
प्रनामपूजापुनिकरही॥जोकछुअ
सोकपिमुषचरही॥रहीजोवस्तुसवकै
समुहाई॥वचीनएकोसवकपिषाई॥ 57

हनुमहि कपि दीषा ॥ धरि प्रदेस सागर महं चले
उ ॥ सो ऊव पियेउ तहां मैं जाहेउ ॥ दोहा ॥ सत्य व
चन हनुमान कह पहुंचि फिरि पुनि बात ॥ आवे
उ राम लषन कहं कहा भरत कहि तात ॥ चौपई
कहहु तात तेहि अस्थल नाऊं ॥ जान चहौं मैं नि
ज प्रभु ठाऊं ॥ सेहि बृतांत जानौ तोहि ताता ॥
सेह मैं श्रवन सुनी कछु बाता ॥ सीतापति अ
रु प्रनिपति साथा ॥ सो लेइ आयेउ निसिच
र नाथा ॥ बरत सो अहइ है मद कह आजू ॥
देविहि बलि देइ है नप राजू ॥ जो कछु नि
ज श्रवनन सुनि पाऐउ ॥ तात तुमहि
मैं सकल सुनाऐउ ॥ निज प्रभु लाज काज
दुष सहहू ॥ मोहि सन सत्य तजन कि
मि कहहू ॥ जान अहहु पै जानन देऊ ॥ प्रभु
आयसु तजि आप जस लेऊ ॥ सुनि अस प
[…]लि चले उहं हनुमाना ॥ जरेउ क्रोध मन
[…]रघु जवाना ॥ दोहा ॥ कपि कह हनेसि मुनि
[…]कपि पुनि मारा ताहि ॥ एक हि एक तहं
[…] वल जग समघरि नाहि ॥ चौपई ॥

ताहि जीति आनै होउ भाई ॥ अहै चालु कपि सु
नु हनुमाना ॥ तुव बल तात सकल जग जाना ॥
वेगि सो जतन विचारहु ताता ॥ कृपासिंधु आनैउ
सोइ भ्राता ॥ दोहा ॥ निमिष विलंब है तव कीसपति मा
रुत सुत सुनु तात ॥ विनु रघुपति धृग जीवन पल्ल
जुग सैम मजात ॥ चौपई ॥ रवि न होइ विनु वारि
दुषारी ॥ तैसे हीह म सव विना षरारी ॥ रवि विनु पं
कज होइ मलीना ॥ तैसे हीह म सव भे हनुमाना ॥
सीता सुधि जिमि औषधि आनी ॥ तेहि प्रकार आन
हु गुन षानी ॥ सुनहु निवहुरि पवन सुत बोला ॥
चित थिर करहु सैन नहिं डोला ॥ जवन चारि द
सती मिटु लोका ॥ आनि होय प्रभुहित जह मन
सोका ॥ तब तैस जग रहे हु सव जाई ॥ लै रैहु कु
ल जोर न चटि आई ॥ यह कहि गर्जि चलेउ ह
नुमाना ॥ प्रलय समय के मेघ समाना ॥ चले
जात ऐक तरु तस राऐऊ ॥ गीधि निजी धप्रहन
अस जाऐहु ॥ दोहा ॥ गीधि निरहै सो ग्रविनी वो
ली पीय सै बैयन ॥ आनहु अमि घमनुज क
र घाउ तोइ मन चयन ॥ चौपई ॥ तासु वचन सु 67

लंका निघग अस कहेहू ॥ अहिरावन ताहि लै गए हू
देइहै वलि देवि हि सोइ जाई ॥ वहे जाग आनि
॥६५॥ मत्र असयाई ॥ कवन कहु जतन देव मै आनी
असकहि गीध नारि सन मानी ॥ जंव हि पव
नसुत यह सुधि पाई ॥ चले हृदय सुमिरत
रघुराई ॥ तुरत पताल हि तिहि छन गयहू ॥
अहिरावन पुर प्रविसित भयहू ॥ द्वार पा
ल मगरं धुज कीसा ॥ कपि मन कहि कहत व
हु रीसा ॥ ठाढ़ रहि बल सि मोहि तोहि डर नाही
जिमि दीप हि न पतंग डराही ॥ मे मारु तसुत प
रलै बालक ॥ धामी चक्कि तजि जन सुख आल
क ॥ सोरठा ॥ सुनत वचन हनुमान ॥ विसमै व
स बोलत भए ॥ अरे मूढ़ अग्यान ॥ मोरे सुत स
पनेहु नही ॥ चौपई ॥ कहत वचन सुत तोहि न
घोरी ब्राम वित्र सब्र व मति भै मोरी ॥ मम सुत
होहि मूढ़ कहि आजा ॥ इतना कहत तोहि नहि
लाजा ॥ कहि प्रकार तै मम सुत भए सी ॥ निज कु
त पति छिन मो सन कहसी ॥ सुनत कहै मगरं
धुज वचना ॥ कहे हु तात जव लंका दहना ॥ त ६५
व आए हु चलि जल छिस मीपा ॥ भए हु प्रसे